इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना
महिला एवं बाल विकास विभाग
उत्त्रांचल सरकार

प्रगति रिपोर्ट

(अक्टूबर,2006 से मई,2007)

मोटिवेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर ट्रेनिंग एण्ड रिइन्फोर्समेन्ट (मित्र)
आस्क विला, देव विहार
मल्ला लोहरियासाल, पोस्ट कठघरिया
ऊँचापुल, हल्द्वानी, नैनीताल
फोन (05942)262609, 9412036583, 9837533217

संस्था विवरण

1	संस्था का नाम, पता, फोन, फैक्स, ई–मेल तथा मोबाइल नम्बर	मोटिवेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर टेनिंग एण्ड रिइन्फोर्समेन्ट मित्र **प्रधान कार्यालय** 'आस्क' विला, देव विहार, मल्ला लोहरियासाल, उंचापुल, पोस्ट कठघरिया, हल्द्वानी, जिला नैनीताल फोन 9412036583, 9412327628 **क्षेत्रीय कार्यालय** लमगड़ा बाजार, लमगड़ा, जिला अल्मोड़ा फोन 05962–256174, 9411 **परियोजना कार्यालय** 369 छोटी मुखानी, हीरा नगर, हल्द्वानी, जिला नैनीताल फोन 05946–262609, 9837533217
2	संस्था का सोसाइटी रजिस्टेशन एक्ट 1860 अथवा कापरेटिव एक्ट 2005 में पंजीकरण की तिथि एवं वैधता	पंजीकरण संख्या 1157 / 1997–98, 31.03.98 सोसाइटी रजिस्टेशन एक्ट 1860 वैधता 31.03.2008
3	सामान्य सभा में कुल सदस्य 1. पुरुष 2. महिला	54 39 15
4	प्रबन्ध कार्यकारिणी में कुल सदस्य 1. पुरुष 2. महिला	09 07 02
5	संस्था का पैन नम्बर	।।ठज्ड6078च
6	संस्था का 12 ए प्रमाण पत्र	हां
7	अन्य विवरण	इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना से सम्बन्धित अधिक जानकारी हेतु संम्पर्क करें– **कु. प्रेमा बर्गली, 9411703647** **श्री खीम सिंह, 05962–256174**

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	इन्दिरा महिला समेकित योजना एक परिचय	
2	परियोजना के तहत प्रथम वर्ष में लिये गये समूह सदस्यों का गांव का विवरण	
3	द्वितीय चरण में लिये गये स्वयं सहायता समूह व गांव की सूची	
4	संस्था द्वारा प्रस्तुत प्रथम कार्ययोजना	
5	परियोजना हेतु प्रस्तुत द्वितीय कार्ययोजना	
6	ए.एफ.सी. मानिटरिंग टीम द्वारा फिल्ड भ्रमण के दौरान उठाये गये बिन्दु	
7	ए.एफ.सी. मानिटरिंग टीम भ्रमण उपरान्त द्वितीय किस्त के सापेक्ष प्रस्तावित कार्ययोजना	
8	प्रस्तावित गतिविधियां एवं उनके प्रभाव	
9	प्रस्तावित कार्ययोजना के सापेक्ष वर्तमान समय तक उपलब्धि	
10	जैविक खाद निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम रिपोर्ट	
11	प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं जल संग्रहण विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम रिपोर्ट	
12	समूहों हेतु आयोजित अभीमुखीकरण कार्यशाला रिपोर्ट	
13	परियोजना के निरन्तरता हेतु अन्य विभागों से समन्वयन	
14	गतिविधि मैट्रिक्स स्कोरिंग	
15	केस स्टडीज	

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना उत्तरांचल महिला एवं बाल विकास सोसायटी द्वारा वित्तपोषित परियोजना है, जिसका प्रमुख लक्ष्य महिला सशक्तीकरण एवं महिलाओं के कार्यबोझ को कम करना है. महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग, उत्तरांचल सरकार के सहयोग से मोटिवेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर ट्रेनिंग एण्ड रिइन्फोर्समेन्ट (मित्र) संस्था द्वारा जनपद अल्मोड़ा के विकास खण्ड लमगड़ा में महिलाओं के सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है. जिसके तहत महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में प्रतिभाग कर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रगति में प्रभावी योगदान सुनिश्चित करने के साथ–साथ कार्यबोझ कम करते हुए समग्र महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है.

परियोजना के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं विशेषकर अनुसूचित जाति व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली **महिलाओं का कार्यबोझ कम करते हुए आय सृजन कार्यक्रमों** से जोड़ना.
2. विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से महिलाओं की क्षमताओं का विकास करना.
3. महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में अग्रसर करते हुए उनके कौशल विकास हेतु समूह या सामूहिक रूचियों के अनुरूप व्यवसाय चयन कर समूह गठन, जागरूकता शिविरों का आयोजन, प्रशिक्षणों एवं शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन करना.
4. समूहों द्वारा उत्पादित उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु कौशल प्रशिक्षणों का आयोजन करना तथा बाजार की व्यवस्था हेतु समूहों को सहयोग करना.

परियोजना के प्रथम चरण में लिये गये स्वयं सहायता समूहों का विवरण

क्र.सं.	*सदस्यों का नाम*	*समूह का नाम*	*गांव*	*जाति*	*बी.पी.एल.*
1	सावित्री देवी	मिलन स्वयं	सत्यों	सामान्य	बी.पी.एल.
	पार्वती देवी	सहायता समूह		''	''
	जानकी देवी			''	''
	हरुली देवी			''	''
	देवकी देवी			''	''
	कमला देवी			अनु.जाति	''
	तारा देवी			अनु.जाति	''
	तुलसी देवी			अनु.जाति	''
2	चम्पा देवी	गंगा स्वयं	सत्यों	सामान्य	बी.पी.एल.

	आनन्दी देवी	सहायता समूह		''	''
	जैतुली देवी			''	''
	हरुली देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''
	कौशल्या देवी			अनु.जाति	''
3	गोविन्दी देवी	दुर्गा स्वयं सहायता समूह	सत्यों	अनु.जाति	बी.पी.एल.
	प्रेमा देवी			अनु.जाति	''
	भागरथी देवी			अनु.जाति	''
	गोपुली देवी			अनु.जाति	''
	जशोदा देवी			अनु.जाति	''
4	भगवती देवी	बृन्दा स्वयं सहायता समूह	सत्यों	सामान्य	बी.पी.एल.
	भागीरथी देवी			''	''
	शान्ति देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''
	तारा देवी			''	''
	गोविन्दी देवी			''	''
5	विशनी देवी	प्रकाश स्वयं सहायता समूह	सत्यों	सामान्य	बी.पी.एल.
	सरस्वती देवी			''	''
	नन्दी देवी			''	''
	दया देवी			''	''
	बसन्ती देवी			''	''
6	गंगा देवी	जय सैम देवता	रालाकोट	सामान्य	बी.पी.एल.
	बसन्ती देवी			''	''
	हीरा देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''
	कलावती देवी			''	''
	गंगा देवी			''	''
	हीरा देवी			''	''
	नीमा बिष्ट			''	''
	कलावती देवी			''	''
7	मोहनी देवी	जय नन्दा	ढैली	सामान्य	बी.पी.एल.
	नीमा देवी			''	''
	रमा देवी			''	''
	तुलसी देवी			''	''
	सरुली देवी			''	''
	सरुली देवी			''	''
	खष्टी देवी			''	''
8	माधवी देवी	प्रेरणा स्वयं सहायता समूह	तोली	सामान्य	बी.पी.एल.
	शान्ति देवी			''	''
	प्रेमा देवी			''	''
	पार्वती देवी			''	''
	पार्वती देवी			''	''
	मुन्नी देवी			''	''
	कमला देवी			''	''
	कमला देवी			''	''
	जानकी देवी			''	''
	जानकी देवी			''	''
	कला देवी			''	''
	कलावती देवी			''	''
	लीला देवी			''	''
	नन्दी देवी			''	''
9	पदमा देवी	जय सन्तोषी मां	तोली	सामान्य	बी.पी.एल.
	इन्द्रा देवी			''	''
	रमा देवी			''	''
	नरुली देवी			''	''
	नारायणी देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''

	देवकी देवी			,,	,,
	जानकी देवी			,,	,,
	जीवन्ती देवी			,,	,,
10	दुर्गा देवी	सरस्वती स्वयं सहायता समूह	तोली	सामान्य	बी.पी.एल.
	माधवी देवी			,,	,,
	जानकी देवी			,,	,,
	हरुली देवी			,,	,,
	गोविन्दी देवी			,,	,,
	मोहनी देवी			,,	,,
	हेमा देवी			,,	,,
11	रमौती देवी	लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह	बलिया	सामान्य	बी.पी.एल.
	प्रेमा देवी			,,	,,
	दीपा देवी			,,	,,
	भगवती देवी			,,	,,
	गीता देवी			,,	,,
	जानकी देवी			,,	,,
	नन्दी देवी			,,	,,
	गोपुली देवी			,,	,,
	प्रेमा देवी			,,	,,
12	मुन्नी देवी	बन्दना	आनुली	अनु.जाति	बी.पी.एल.
	पनुली देवी			अनु.जाति	,,
	सुन्दरी देवी			अनु.जाति	,,
	बसन्ती देवी			अनु.जाति	,,
	नन्दी देवी			अनु.जाति	
13	पुष्पा देवी	सिद्धजी स्वयं सहायता समूह	आनुली	सामान्य	बी.पी.एल.
	चन्द्रा फर्त्याल			,,	,,
	हेमा देवी			,,	,,
	तारा देवी			,,	,,
	भवानी देवी			,,	,,
	भगवती देवी			,,	,,
	मुन्नी देवी			,,	,,
14	माधवी देवी	शान्ति स्वयं सहायता समूह	कनरा	सामान्य	बी.पी.एल.
	तुलसी देवी			,,	,,
	चन्द्रा देवी			,,	,,
	हेमा देवी			,,	,,
	हेमा देवी			,,	,,
	माधवी देवी			,,	,,
	हरुली देवी			,,	,,
	मधुली देवी			,,	,,
	बलिमा देवी			,,	,,
15	देवकी देवी	पर्वती स्वयं सहायता समूह	कनरा	सामान्य	बी.पी.एल.
	बचुली देवी			,,	,,
	कलावती देवी			,,	,,
	गंगा देवी			,,	,,
	भागीरथी देवी			,,	,,
	तुलसी देवी			,,	,,
	मुन्नी देवी			,,	,,
	माधवी देवी			,,	,,
	पार्वती देवी			अनु.जाति	,,
16	देवकी देवी	रुकमणी स्वयं सहायता समूह	कनरा	सामान्य	बी.पी.एल.
	कमला देवी			,,	,,
	कलावती देवी			,,	,,
	कुन्ती देवी			,,	,,
	राधिका देवी			,,	,,
	देवकी देवी			अनु.जाति	,,
	देवकी देवी			अनु.जाति	,,
	गोविन्दी देवी			अनु.जाति	,,

17	इन्द्रा देवी	यमुना स्वयं सहायता समूह	कनरा	सामान्य	बी.पी.एल.
	चम्पा देवी				''
	गीता देवी			''	''
	नीरु देवी			''	''
	चन्द्रा देवी			''	''
	नन्दी देवी			''	''
	जानकी देवी			''	''
	जानकी देवी			अनु.जाति	''
18	बसन्ती देवी	हरज्यू स्वयं सहायता समूह	ध्यूली धौनी	सामान्य	बी.पी.एल.
	नारायणी देवी			''	''
	पार्वती देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''
	मुन्नी देवी			''	''
	मोहनी देवी			''	''
	तिनगा देवी			''	''
	हरुली देवी			''	''
	प्रेमा देवी			''	''
19	नारायणी देवी	प्रगति स्वयं सहायता समूह	ध्यूली रौतेला	सामान्य	बी.पी.एल.
	तुलसी देवी			''	''
	कला देवी			''	''
	दीपा देवी			''	''
	हेमा देवी			''	''
	पार्वती देवी			''	''
	हरुली देवी			''	''
	भागुली देवी			''	''
20	जयन्ती देवी	दुर्गा स्वयं सहायता समूह	ध्यूली रौतेला	सामान्य	ए.पी.एल.
	हरुली देवी			''	''
	प्रेमा देवी			''	''
	पुष्पा देवी			''	''
	तिलगा देवी			''	''
	तुलसी देवी			''	''
	धनुली देवी			''	''
	देवकी देवी			''	''
	पुष्पा देवी			''	''
	हरुली देवी			''	''
	बचुली देवी			''	''
	लीला देवी			''	''
21	देवकी देवी	महिला संकल्प	बरम	सामान्य	बी.पी.एल.
	दीपा देवी			''	''
	नन्दी देवी			''	''
	दुर्गा देवी			''	''
	गोधनी देवी			''	''
	भागुली देवी			''	''
	राधिका देवी			''	''
	लीला देवी			''	''
	जसोदा देवी			''	''
22	चम्पा देवी	महिला विकास	बरम	सामान्य	बी.पी.एल.
	बसन्ती देवी			''	''
	राधिका देवी			''	''
	पार्वती देवी			''	''
	पनुली देवी			अनु.जाति	''
	रेखा देवी			अनु.जाति	''
23	मुन्नी देवी	ग्रामीण महिला संगठन	बरम	सामान्य	बी.पी.एल.
	दीपा देवी			''	''
	हेमा देवी			''	''
	मुन्नी देवी			''	''
	लछमा देवी			''	''

	नन्दी देवी			,,	,,
	चन्द्रा देवी			,,	,,
24	शान्ती बिष्ट	बाराही	उडियारी	सामान्य	बी.पी.एल.
	मुन्नी देवी			,,	,,
	कलावती देवी			,,	,,
	गीता देवी			,,	,,
	जयन्ती देवी			,,	,,
	तुलसी देवी			,,	,,
25	डिगरी देवी	भगवती	झालडुंगरा	सामान्य	बी.पी.एल.
	दुर्गा देवी			,,	,,
	हरुली देवी			,,	,,
	सरुली देवी			,,	,,
	कला देवी			,,	,,
	सरुली देवी			,,	,,
	रीता जोशी			,,	,,
	उमा देवी			,,	,,
	देवकी देवी			,,	,,

नोट : परियोजना के प्रथम चरण में सीधे तौर पर 25 स्वयं सहायता समूह के कुल 197 लाभार्थी जुड़े है. अन्य ग्रामीणों को भी संस्था द्वारा जागरुक किया जा रहा है व अप्रत्यक्ष रुप से परियोजना के उद्देश्य की पूर्ति हेतु अन्य माध्यम जैसे अन्य परियोजनाओं से जुड़ाव इत्यादि से लाभान्वित किया जा रहा है.

प्रथम चरण में लभार्थियों का विवरण

अनुसूचित जाति		सामान्य		कुल	
बी.पी.एल.	ए.पी.एल.	बी.पी.एल.	ए.पी.एल.	बी.पी.एल.	ए.पी.एल.
21	00	166	12	187	12

द्वितीय चरण में लभार्थियों का विवरण

अनुसूचित जाति		सामान्य		कुल	
बी.पी.एल.	ए.पी.एल.	बी.पी.एल.	ए.पी.एल.	बी.पी.एल.	ए.पी.एल.
29	00	279	23	308	23

द्वितीय चरण में परियोजना के साथ जुड़े स्वयं सहायता विवरण

क्र.सं.	गांव का नाम	समूह का नाम	सदस्यों की संख्या			
			अनुसूचित जाति		सामान्य	
			बी.पी.एल.	ए.पी.एल.	बी.पी.एल.	ए.पी.एल.
1	सत्यों	मिलन	03	0	05	0
2	सत्यों	गंगा	01	0	05	0
3	सत्यों	दुर्गा	05	0	00	0
4	सत्यों	वृन्दा	0	0	06	0
5	सत्यों	प्रकाश	0	0	05	0
6	रालाकोट	जय सैम देवता	0	0	09	0
7	ढैली	जय नन्दा	0	0	07	0
8	तोली	प्रेरणा	0	0	14	0
9	तोली	जय सन्तोषी मां	0	0	09	0
10	तोली	सरस्वती	0	0	07	0
11	बलिया	लक्ष्मी	0	0	09	0
12	आनुली	बन्दना	05	0	00	0
13	खरसोड़ा	सिद्धजी	0	0	07	0
14	बरगला	जय सैम	03	0	09	01
15	कनरा	शान्ति	0	0	09	0
16	कनरा	पर्वती	01	0	08	0
17	कनरा	रुकमणी	03	0	05	0
18	कनरा	यमुना	01	0	07	0
19	ध्यूली धौनी	हरज्यू	0	0	09	0
20	ध्यूली रौतेला	प्रगति	0	0	08	0
21	ध्यूली रौतेला	दुर्गा	0	0	00	12
22	बरम	महिल संकल्प	0	0	09	0
23	बरम	महिला विकास	02	0	04	0
24	बरम	ग्रामीण महिला संगठन	0	0	07	0
25	बरम	महिला उत्थान	0	0	10	0
26	बरम	महिला विचार मंच	0	0	06	0
27	उडियारी	बाराही	0	0	06	0
28	झालडुंगरा	भगवती	0	0	09	0
29	तल्ला लमकोट	एकता	0	0	11	0
30	तल्ला लमकोट	रुपा	0	0	07	0
31	चायखान	प्रीति	0	0	00	10
32	चायखान	रोशनी	05	0	05	0
33	धूरा संगरौली	विकास	0	0	11	0
34	काण्डे	सत्भावना	0	0	07	0
35	काण्डे	धाम देवता	0	0	07	0
36	काण्डे	प्रिया	0	0	13	0
37	जैती	मीराबाई	0	0	08	0
38	सुनाड़ी	महिला मित्र	0	0	09	0
39	लोहना	प्रेरणा	0	0	06	0
40	लोहना	गायत्री	0	0	06	0
कुल			29	00	279	23
कुल लाभार्थी			331			

प्रस्तावित कार्ययोजना कार्ययोजना (प्रथम)

(01 अक्टूबर,2005 से 31 मार्च,2006)

1. परियोजना कार्य हेतु सर्वे
2. परियोजना का प्रचार–प्रसार
3. परियोजना कार्य हेतु गांव का चयन
4. परियोजना के प्रथम वर्ष कार्य हेतु चयनित गांव में 20 स्वयं सहायता समूहों का गठन एंव अधिग्रहण
5. स्वयं सहायता समूहों की बैंठक का अयोजन /समूह एवं ग्राम स्तरीय
6. स्वयं सहायता समूहों का बैंक से जुड़ाव
7. परियोजना स्टाफ का चयन
8. प्रस्ताव में इंगित विषयों पर ग्राम स्तरीय जागरुकता बैठकों का आयोजन
9. जागरुकता हेतु दीवार लेखन
10. प्रस्ताव मे इंगित प्रशिक्षण हेतु स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की पहचान

प्रस्ताव के अनुसार संस्था द्वारा प्रथम छः माह में उपरोक्तानुसार कार्य सम्पादित किये जायेंगे, तद्परान्त आगामी छः माह हेतु परियोजना कार्य पूर्वनियोजित तिथिवार सम्पादित किया जायेगा.

प्रस्तावित कार्ययोजना (द्वितीय)

(01 अप्रैल,2006 से 30 सितम्बर,2006)

क.सं.	गतिविधियां	प्रस्तावित समय
1	गांव स्तरीय जागरुकता मिटिंग एवं निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम तिथि से पूर्व प्रशिक्षणों की तैयारी व सम्बन्धित समूहों से सम्पर्क	पूरे छः माह प्रत्येक समूह के साथ माह में न्यूनतम एक बार जागरुकता मिटिंग की जायेगी
2	दो दिवसीय स्वयं सहायता समूह ओरियेन्टेशन कार्यशाला	03.04.2006 से 04.04.2006 13.04.2006 से 14.04.2006 27.04.2006 से 28.04.2006 15.05.2006 से 16.05.2006 10.07.2006 से 11.07.2006
3	02 दिवसीय एन.जी.ओ., एस.एच.जी व बैंकर्स ओरियेन्टेशन कार्यशाला	17.04.2006 से 18.04.2006
4	06 दिवसीय सिलाई व साफ्ट टाईज प्रशिक्षण	01.05.2006 से 06.05.2006
5	06 दिवसीय मोमबत्ती निर्माण प्रशिक्षण	05.06.2006 से 10.06.2006
6	10 दिवसीय ऐपड़ प्रशिक्षण	15.09.2006 से 24.09.2006
7	02 दिवसीय सब्जी व फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण	27.08.2006 से 28.08.2006
8	03 दिवसीय जैविक खाद प्रशिक्षण	26.06.2006 से 28.06.2006
9	03 दिवसीय प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट प्रशिक्षण	17.08.2006 से 19.08.2006
10	20 जागरुकता सांस्कृति कार्यक्रम कठपुतली	06 कार्यक्रम अप्रैल,06 02 कार्यक्रम मई,06 02 कार्यक्रम जून,06 04 कार्यक्रम जुलाई,06 06 कार्यक्रम अगस्त,06
11	शेष दीवार लेखन कार्य	माह अप्रैल,06 से मई,06
12	समूह से बैंक से जुड़ाव व ग्रेडिंग, सी.सी.एल. मे सहायता	पूरे छः माह समूह आवश्यकता पर
13	03 एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन	अगस्त,06 से सितम्बर,06
14	02 पालीहाउस प्रदर्शन	अगस्त,06 से सितम्बर,06
15	नौलों का जीर्णोद्धार	मई,06 से जून,06
16	05 चैपकटर प्रदर्शन	सितम्बर,06
17	02 नाद प्रदर्शन	सितम्बर,06
18	04 वर्मी कम्पोस्ट प्रदर्शन	सितम्बर,06
19	03 बी.डी.हीम कम्पोस्ट प्रदर्शन	सितम्बर,06

संस्था द्वारा उपरोक्त कार्यक्रम 30 सितम्बर,2006 तक पूर्ण किये जायेंगे, लेकिन लाभार्थी के सुविधानुसार कुछ कार्यक्रमों के समय में सूक्ष्म परिवर्तन किये जा सकते हैं.

'मित्र' संस्था में ए.एफ.सी. द्वारा इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत किये गये मूल्यांकन के दौरान उठाये गये बिन्दु

1. ए.एफ.सी. टीम का मोनिटरिंग भ्रमण 'मित्र' संस्था के लिए काफी उपयोगी रहा और संस्था की सीख में काफी बढ़ोत्तरी हुई. टीम द्वारा संस्था की कुछ खामियों को भी उजाकर किया गया. संस्था भविष्य में परियोजना संचालन में इन बिन्दुओं के ध्यान में रखकर परियोजना को और अधिक सफल बनाने हेतु भरसक प्रयास करेगी.
2. ए.एफ.सी. टीम द्वारा संस्था के क्षेत्रीय कार्यालय में भ्रमण किया गया था और संस्था उन रिकार्ड को उपलब्ध कराने में असमर्थ रही जो रिकार्ड संस्था प्रधान कार्यालय में उपलब्ध रहते हैं. संस्था द्वारा टीम से प्रधान कार्यालय में चलने का अनुरोध किया गया व समयाभाव के चलते टीम प्रधान कार्यालय में नहीं आ सकी.
3. क्योंकि टीम द्वारा बहुत ही अल्प में भ्रमण किया गया था, जिसके चलते संस्था कार्यकर्त्ता कुछ दस्तावेज उपलब्ध नहीं करा सके, भविष्य में इन सभी रिकार्ड को टीम के सामने प्रस्तुत किया जायेगा.
4. दर्शाये गये बिन्दु जिसमें टीम द्वारा कार्ययोजना के सापेक्ष कार्य पूर्ण नहीं करने की बात कही है, इस सम्बन्ध में अवगत करना है कि संस्था द्वारा अवमुक्त धनराशि के अनुसार ही कार्य पूरा किया गया, प्रेषित कार्ययोजना के सापेक्ष संस्था द्वारा धन की अनुपलब्धता के चलते कार्य पूर्ण नहीं किये जा सके. वर्तमान में संस्था को धनराशि अवमुक्त की जा चुकी है इस धनराशि के सापेक्ष संस्था द्वारा कार्ययोजना प्रस्तुत की जा रही है और यह कार्य समय से पूर्ण किया जायेगा.
5. संस्था का इस परियोजना के तहत मुख्य उद्देश्य महिलाओं का कार्यबोझ कम करने के साथ–साथ उन्हें आयसृजक गतिविधि से जोड़ना है.
6. संस्था द्वारा परियोजना के तहत तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसके काफी अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं, जिससे महिलाओं की समय बचत के साथ–साथ आय में वृद्धि हो रही है.
7. मोनिटरिंग टीम द्वारा संस्था को परियोजना कार्य हेतु पूर्णकालिक स्टाफ रखने की बात कही गयी है, अवगत करना है कि इस परियोजना में किसी प्रकार के स्टाफ का प्राविधान नहीं किया गया है. फिर भी परियोजना कार्य हेतु संस्था द्वारा एक पूर्णकालिक व दो अंशकालिक कार्यकर्ताओं का प्राविधान किया गया है, शेष प्रशिक्षण इत्यादि का कार्य रिसोर्स पर्सन के माध्यम से सम्पादित किया जा रहा है.
8. दीवार लेखन संस्था द्वारा दो चरणों में करवाया गया था.
9. दीवार लेखन में संस्था द्वारा परियोजना के उद्देश्यों को भी लिखवाया गया है, समय की कमी के चलते टीम परियोजना के सभी क्षेत्रों में भ्रमण नहीं कर पायी.
10. संस्था का लमगड़ा में कार्य करने का अनुभव काफी पुराना है तथा पूर्व अनुभव उपरान्त संस्था द्वारा पाया गया कि इस क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं के तहत काफी संख्या में समूहों का गठन किया गया है व विशेष तौर पर स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत महिला समूहों की संख्या अधिक है. इस योजना के तहत समूह को जागरुक करने हेतु कोई विशेष प्रशिक्षण व गतिविधियों का प्राविधान नहीं है. अतः संस्था द्वारा नये समूह गठन करने के बजाय इन्हीं समूह को सशक्त करने की बात सोची. संस्था द्वारा इस परियोजना के तहत अधिकांश उन्हीं समूहों को अधिग्रहित किया है जो समूह स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत गठित है चाहे ये समूह किसी भी संस्था

द्वारा गठित किये गये हो. इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना अक्टूबर,05 में प्रारम्भ की गयी थी व इस क्षेत्र में आजीविका सुधार परियोजना का शुभारम्भ मार्च,06 में हुआ. इसलिए आजीविका परियोजना के तहत चयनित क्षेत्र में भी संस्था के 07 समूह अधिग्रहित हैं, इस सम्बन्ध में संस्था द्वारा दोनों परियोजनाओं से विचार–विमर्श हो चुका है. संस्था द्वारा इस परियोजना के तहत वह गतिविधि उन समूहों के मध्य संचालित नहीं की जा रही है जिसका प्राविधान अन्य परियोजना से है.

11. क्योंकि समूह स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत गठित किये गये हैं, संस्था के अनुभव के अनुसार इन समूहों का जगरुकता का स्तर काफी निम्न होता है और इन समूहों का जागरुकता स्तर बढ़ाने में कुछ समय लगेगा. संस्था आस्वस्थित करती है कि टीम के आगामी भ्रमण में समूह जागरुकता स्तर में काफी सुधार होगा.

12. टीम द्वारा उल्लिखित कुछ स्वयं सहायता समूहों के रिकार्ड ठीक से व्यवस्थित नहीं हैं. इस सम्बन्ध में उपरोक्त बिन्दु में अवगत कराया जा चुका है कि ये समूह स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत गठित है, अतः इनके रिकार्ड इत्यादि का व्यवस्थापन इत्यादि उतना उचित नहीं है. इन्हें व्यवस्थित किया जा रहा है व भविष्य में इस विषय पर और अधिक ध्यान दिया जायेगा.

13. टीम द्वारा उजागर क्रय–विक्रय प्रकरण में कुछ खामियां सामने आयी, जिनकों भविष्य में दूर करने का हर सम्भव प्रयास किया जायेगा.

14. टीम द्वारा भ्रमण को दौरान संस्था परियोजना स्टाफ के कार्य क्षमता को सराहा गया था, अतः स्टाफ प्रशिक्षित नहीं है इससे संस्था शायद सहमत नहीं है.

15. संस्था कार्यकत्ताओं द्वारा प्रत्येक माह स्वयं सहायता समूहों की बैठकों में प्रतिभाग किया जाता है व टीम द्वारा संस्था कार्यकत्ताओं को मिटिंग के दौरान ध्यान देने हेतु कुछ बिन्दु बताये गये थे, जिसमें संस्था ध्यान दे रही है.

ए.एफ.सी. मोनिटरिंग उपरान्त कार्ययोजना

द्वितीय किस्त के सापेक्ष कार्ययोजना

क.सं.	गतिविधि
1	परियोजना का प्रचार–प्रसार
2	परियोजना स्टाफ का रिफैसमेन्ट
3	परियोजना के अगले चरण हेतु नये गांव व समूहों का सर्वे कार्य
4	आवश्यकतानुसार नये समूहों का अधिग्रहण कार्य
5	गांव स्तरीय जागरुकता मिटिंग एवं निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम तिथि से पूर्व प्रशिक्षणों की तैयारी व सम्बन्धित समूहों से सम्पर्क
6	02 दिवसीय स्वयं सहायता समूह ओरियेन्टेशन कार्यशाला
7	02 दिवसीय एन.जी.ओ., एस.एच.जी. व बैंकर्स ओरियेन्टेशन कार्यशाला
8	02 दिवसीय सब्जी एवं फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण
9	03 दिवसीय जैविक खाद प्रशिक्षण
10	03 दिवसीय प्रोटैक्टेट कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट प्रशिक्षण
11	02 दिवसीय फूलों की खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण
12	12 जागरुकता सांस्कृतिक कार्यक्रम कठपुतली कार्यक्रम
13	आवश्यकतानुसार दीवार लेखन कार्य
14	समूहों का बैंक से जुड़ाव, ग्रेडिंग, सी.सी.एल. में सहायता
15	03 एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन
16	02 पालीहाउस प्रदर्शन
17	05 चैपकटर प्रदर्शन
18	02 नाद प्रदर्शन निर्माण
18	04 वर्मी कम्पोस्ट प्रदर्शन निर्माण
20	03 बी.डी.हीप कम्पोस्ट प्रदर्शन

नोट : यह प्रस्तावित कार्ययोजना है, क्षेत्र में कार्य करने के दौरान लाभार्थियों की मांग व सुविधानुसार कार्ययोजना में सूक्ष्म परिवर्तन किये जा सकते हैं.

ए.एफ.सी. की मोनिटरिंग उपरांत कार्ययोजना

द्वितीय किस्त के सापेक्ष निम्नानुसार संस्था द्वारा कार्यक्रम किये जाने प्रस्तावित हैं

1. **परियोजना का प्रचार प्रसार**

   परियोजना के प्रचार–प्रसार का कार्य संस्था द्वारा वर्षभर किया जायेगा, जिसके तहत संस्था व संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा विकास खण्ड लमगड़ा के गॉवों में विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा तथा विकास खण्ड के कर्मचारियों तथा जन प्रतिनिधियों को इस कार्यक्रम में किसी न किसी रूप में परियोजना के साथ जोड़कर, विकास खण्ड के दूर दराज के गॉवों में भी परियोजना का प्रचार प्रसार करेगी.

2. **परियोजना स्टाफ का रिफैसमेन्ट**

   परियोजना से जुड़े स्टाफ का संस्था के अन्य वरिष्ठ सदस्यों के द्वारा हर छः महीने में परियोजना के विषय के बारे में अन्य जानकारी हेतु स्टाफ के परियोजना अभिमुखिकरण के लिए शिविर का आयोजन कर परियोजना के बारे में नयी नयी जानकारी प्रदान करगी जिससे परियोजना को और भी बेहतर ढंग से संस्था क्रियान्वित कर सकेगी.

3. **परियोजना के अगले चरण हेतु नये गॉवों व समुहों का सर्वे कार्य**

   विकास खण्ड लमगड़ा के गॉवों में अनेक संस्थाऐं किसी न किसी परियोजना से जुड़ी हूई हैं मित्र संस्था भी विगत 6–7 वर्षो से इस विकास खण्ड के समीपवर्ती एवं दूर दराज के गॉवों से जुड़ कर कुशलता पूर्वक कार्य करती आ रही । पूर्व में अनेक संस्थाओं के द्वारा विभिन्न गॉवों में समूहों का गठन तो कर दिया गया था मगर समूहों को सुचारू रूप से नही चलाया गया तथा काफी समय से यह समूह निष्क्रीय पड़े हैं इन समूहों को भी संस्था के कार्यकर्ता पूनः स्थापित कर उन समूहों को सुचारू रूप से चलायेंगे और मुख्य धारा से पिछड़े लोगों को एकत्र कर अनेक समूहों का गठन मित्र संस्था करेगी.

4. **आवशयकतानुसार नये समूहों का अधिग्रहण कार्य**

   मित्र संस्था द्वारा विगत वर्ष में विकस खण्ड के लमगड़ा के विभिन्न गॉवों में 25 समूहों का गठन किया गया और उन्हे सुव्यवस्थित रूप से चलाया है आने वाले साल के लिए संस्था का लक्ष्य 15 और नये समूहों का गठन अथवा अधिग्रहण करना तय किया गया है जिसमें वे समूह भी शामिल हैं जो किसी कारण से छूट गये या फिर सुचारू रूप से नही चल रहे है संस्था पूरे

तन्मयता के साथ सभी 40 समूहो को सुव्यवस्थित रूप से चलाएगी तथा परियोजना की सफलता हेतु आवशयक कार्य करेगी

5. **गांव स्तरीय जागरुकता मिटिंग एवं निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम तिथि से पूर्व प्रशिक्षणों की तैयारी व सम्बन्धित समूहों से सम्पर्क**

संस्था परियोजना उद्देश्यों की सफल प्राप्ति हेतु गांव स्तरीय मिटिंग, समूह सदस्यों से सम्पर्क व प्रशिक्षण पूर्व उचित सदस्यों के चयन हेतु वर्षभर कार्य करेगी. तथा संस्था पूर्व में किये गये कार्यो में जो कुछ खामियॉ रही उनसे सबक लेते हुए भविष्य में परियोजना को और भी बेहतर ढंग से करने के लिए हर संभव प्रयास करेगी.

6. **स्वयं सहायता समूह ओरियेन्टशन कार्यशाला**

परियोजना के अन्तर्गत समूहों सदस्यों के सशक्तीकरण हेतु 02 ओरियेन्टेशन कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा, जिसमें से एक जैती व एक लमगड़ा क्षेत्र में आयोजित की जायेगी. प्रशिक्षणों की अवधि 13–14.02.2007 व 10–11.052007 रखी गयी है.

7. **एन.जी.ओ., एस.एच.जी. व बैंकर्स ओरियेन्टेशन कार्यशाला**

परियोजना के तहत जैंती क्षेत्र के समूहों हेतु उपरोक्त विषय पर 02 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा. उपरोक्त कार्यशाला में स्वयं सहायता समूहों, एन.जी.ओ. प्रतिनिधियों के साथ–साथ स्थानीय बैक मैनेजर, लीड बैंक आफीसर व डी.डी.एम. नाबार्ड को शामिल किया जायेगा. जिससे तीनों की आपसी समझ विकसीत हो सके तथा समूहों को बैंक जुड़ाव व ग्रेडिंग/सी.सी.एल. में किसी प्रकार की परेशानी न हो. उक्त कार्यशाला हेतु 5–6 अप्रैल,2007 की तिथि निर्धारित की गयी है.

7. **सब्जी एवं फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण**

परियोजना के तहत एक 02 दिवसीय प्रशिक्षण सब्जी व फल प्रसंस्करण विषय पर किया जायेगा. प्रशिक्षण की अवधि 25–26.06.2007 के मध्य रखी गयी है.

9. **जैविक खाद निर्माण सम्बन्धी प्रशिक्षण**

उतरांचल जैविक राज्य के रुप में अग्रसर है, इस कार्य को आगे बढ़ाने हेतु संस्था द्वारा परियोजना के तहत जैविक खाद निर्माण विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण जैंती क्षेत्र के समूहों हेतु 01–03 अक्टूबर,2006 को प्रस्तावित किया है. जिसमें जैविक निर्माण की विभिन्न विधियों को प्रयोगात्मक ढंग से बताया जायेगा.

10. प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट प्रशिक्षण

परियोजना के तहत प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट विषय पर 03 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन लमगड़ा क्षेत्र के समूहों हेतु 10–12 नवम्बर,2006 के मध्य किया जाना प्रस्तावित है. प्रशिक्षण में पालीहाउस व एल.डी.पी.ई. टैंक निर्माण प्रयोगात्मक ढंग बनाना भी प्रस्तावित है.

11. फूलों की खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण

परियोजना के तहत 02 दिवसीय फूलों की खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण दिनांक 01–02 जुलाई,2007 के मध्य किया जाना प्रस्तावित है.

12. जागरुकता सांस्कृतिक कार्यक्रम कठपुलती कार्यक्रम

स्वयं सहायता के सदस्यों व अन्य ग्रामीणों को महिला मुद्दो, कार्यबोझ मुक्ति, सामाजिक मुद्दे इत्यादि विषय पर जागरुक करने हेतु कठपुलती कार्यक्रम किये जाने प्रस्तावित हैं. यह कार्यक्रम मई से जुलाई,2006 के मध्य किये जाने प्रस्तावित हैं, जिसमें से 08 कार्यक्रम जैंती व 04 कार्यक्रम लमगड़ा क्षेत्र में किये जायेंगे.

13. आवश्यकतानुसार दीवार लेखन कार्य

परियोजना के तहत परियोजना के प्रचार–प्रसार व जन जागरुकता हेतु दीवार लेखन कार्य किया जाना प्रस्तावित है. यह कार्य जैंती क्षेत्र में मई–जून,2007 के मध्य किया जायेगा.

14. समूहों का बैंक से जुड़ाव, ग्रेडिंग, सी.सी.एल. में सहायता

संस्था द्वारा परियोजना के तहत लिये गये समूहों का बैंक जुड़ाव, ग्रेडिंग, सी.सी.एल. व वित्त पोषण कार्य वर्षभर किया जायेगा. संस्था द्वारा इस परियोजना के तहत अधिकांश समूह स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत गठित समूहों को अधिग्रहित किया गया है. यह समूह कतिपय कारणों से विखर चुके थे, इन्हें संस्था द्वारा पुर्नजीवित करने के साथ–साथ सशक्त भी किया जायेगा. संस्था द्वारा बैंक व सहायक विकास अधिकारी (आई.एस.बी.) के साथ मिलकर इन समूहों की ग्रेडिंग की जायेगी व इनकी उचित सी.सी.एल. करायी जायेगी तथ पूर्व वर्ष में लिये गये समूहों का वित्त पोषण कार्य किया जायेगा.

15. एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन

संस्था द्वारा बरसात से पूर्व अर्थात माह मई–जून,2007 में तीन एल.डी.पी.ई. टैंकों निर्माण कार्य कराया जायेगा.

16. पॅालीहाउस प्रदर्शन

संस्था द्वारा परियोजना के तहत 02 पालीहाउस का निर्माण कार्य मई, 2007 से पूर्व कर लिया जायेगा.

17. चैपकटर प्रदर्शन

महिला कार्यबोझ कम करने में चैप कटर का विशेष योगदान है, इस हेतु संस्था द्वारा परियोजना के तहत संस्था द्वारा 05 चैपकटर प्रदर्शन कार्य किये जाने हैं यह कार्य संस्था द्वारा मई,2007 से पूर्व कर लिये जायेंगे. इसमें से अधिकांश प्रदर्शन लमगड़ा क्षेत्र में किये जायेंगे.

18. नाद प्रदर्शन निर्माण

संस्था द्वारा महिला कार्य बोझ कम करने हेतु पशुनाद निर्माण प्रदर्शन कार्य किया जाना है. यह कार्य संस्था द्वारा मई–जून,2007 के मध्य किया जायेगा. ये प्रदर्शन जैंती क्षेत्र में किये जायेंगे.

19. वर्मी कम्पोस्ट प्रदर्शन निर्माण

जैविक खाद में वर्मी कम्पोस्ट सबसे अच्छी खाद मानी जाती रही है, इसी के प्रचार–प्रसार हेतु संस्था द्वारा वर्मी कम्पोस्ट के 04 प्रदर्शन रखे गये है. इस विधि से निर्मित खाद से भी महिलाओं के कार्यबोझ में काफी स्तर तक कमी होती है व पैदावार बढ़ती है. इन वर्मी कम्पोस्टों का प्रदर्शन संस्था द्वारा जैती क्षेत्रों की महिलाओं के मध्य अप्रैल–मई,2007 के मध्य किये जायेंगे.

20. बी.डी.हीप कम्पोस्ट निर्माण

जैविक खाद के तहत संस्था द्वारा 03 बी.डी.हीपों को प्रदर्शन किया जाना है, यह कार्य संस्था द्वारा अक्टूबर–नवम्बर,2006 के मध्य जैंती क्षेत्र में किया जायेगा.

अभिसरण गतिविधियां

संस्था का मूल उद्देश्य ग्रामीणों महिलाओं का समाजिक व आर्थिक सशक्तीकरण करना है. इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु संस्था इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के साथ–साथ अन्य परियोजनाओं के साथ अभिसरण हेतु हर सम्भव प्रयासरत रहेगी. वर्तमान समय में कई विभागों व गैर सरकारी संगठनों द्वारा विकास सम्बन्धी अनेक योजनाऐं क्रियान्वित की जा रही है, परन्तु इन योजनाओं की कतिपय कारणों से महिलाओं तक पहुंच नहीं हो पा रही है. अतः संस्था की यह भी कोशिश रहेगी कि इन योजनाओं से उन महिलाओं को लाभ पहुंचाया जाय जो वास्वत में इनकी हकदार है. साथ ही अनेक संस्थाऐं व अनुसंधान केन्द्र भी महिला कार्यबोझ कम करने हेतु अनेक उन्नत कृषि यंत्रों का विकास कर रहे है, इनकी जानकारी भी ग्रामीणों तक नहीं पहुंच पा रही है. संस्था इन उन्नत यंत्रों को भी गांव तक पहुंचाने हर सम्भव प्रयास करेगी.

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना
द्वितीय किस्त के सापेक्ष मित्र संस्था द्वारा किये गये कार्य

सर्वे व परियोजना का प्रचार प्रसार

राज्य परियोजना इकाई, देहरादून द्वारा 23.11.2006 को देहरादून में सभी संस्थाओं हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया था. कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य परियोजना के तहत अंगीकृत गांव व स्वयं सहायता समूहों का सदस्यों का उचित ढंग से सर्वे किये जाने सम्बन्धी विषय पर विचार–विमर्श किया जाना था. इस कार्यशाला के दौरान परियोजना इकाई द्वारा सभी संस्थाओं को व्यक्तिगत लभार्थी व गैर लाभार्थी सर्वेक्षण हेतु प्रपत्र उपलब्ध कराये गये. संस्था द्वारा माह नवम्बर से मार्च,2007 के मध्य इन प्रपत्रों को भरकर उसकी कम्पाइल फार्मेट राज्य परियोजना इकाई देहरादून में साफ्ट तथा हार्ड कापी में प्रेषित किये जा चुके हैं. साथ ही परियोजना कार्य के उचित क्रियान्वयन हेतु राज्य परियोजना इकाई द्वारा 20.02.2007 को देहरादून में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य परियोजना के तहत क्रियान्वित की जा रही गतिविधियों की मैट्रिक्स स्कोरिंग करना व अन्य विषयों पर विचार–विमर्श करना था. संस्था द्वारा सर्वेक्षण उपरान्त कुछ गतिविधियों की मैट्रिक्स स्कोरिंग कर रिपोर्ट देहरादून भेजी जा चुकी हैं. परियोजना के तहत अंगीकृत कुछ समूहों द्वारा प्रशिक्षण, लगातार मिटिंग उपरान्त अच्छा कार्य किया जा रहा है, इस समूहों द्वारा की जा रही गतिविधियों का संस्था द्वारा डाक्यूमेन्टेशन भी किया जा रहा है.

संस्था द्वारा लगातार परियोजना का प्रचार–प्रसार कार्य किया जाता रहा है, इस हेतु संस्था कार्यकत्ताओं द्वारा समय–समय पर ग्राम व विकास खण्ड स्तरीय मिटिंग का आयोजन किया गया. संस्था द्वारा अन्य विभागीय कर्मचारियों व जन प्रतिनिधियों के माध्यम से भी परियोजना का प्रचार किया गया.

परियोजना स्टाफ का रिफैसमेन्ट

संस्था के अनुभवी सदस्यों द्वारा परियोजना में कार्यरत स्टाफ का समय–समय पर अरियेन्टेशन किया गया. दिनांक 12.05.2006 को संस्था सचिव श्री सुरेश अधिकारी व परियोजना समन्वयक श्री कमलेश जोशी द्वारा परियोजना के तहत पूर्णतः व आंशिक रुप से कार्य कर रहे स्टाफ को प्रशिक्षित किया गया.

परियोजना के अगले चरण हेतु नये गॉवों व समुहों का सर्वे कार्य

संस्था के प्रथम चरण हेतु लमगड़ा के समीपवर्ती गांवों व समूहों का चयन किया गया है. परियोजना के द्वितीय चरण हेतु संस्था द्वारा अधिकांश जैंती, लमगड़ा क्षेत्रों का चयन किया गया. क्योंकि लमगड़ा के समीपवर्ती क्षेत्रों में वर्तमान समय में कुछ नई परियोजनाऐं शुरु की गयी हैं व विकास खण्ड से नजदीक होने के कारण भी विभागीय कर्मचारियों की नजदीकी गांवों तक पहुंच हो जाती है, इस कारण दूर दराज के गॉवों की अपेक्षा में इन समीपवर्ती गॉवों के ग्रामीणों में जागरुकता का स्तर कुछ हद तक बढ़ा है. जैंती क्षेत्र क्योंकि विकास खण्ड से लगभग 45 किमी. की दूरी पर स्थित है, इस कारण अधिकांश परियोजनाओं व विभाग की पहुंच यहां तक नहीं हो पाती है, संस्था का मुख्य उद्‌देश्य इस क्षेत्र को परियोजना के तहत चयनित करने का यही रहा है तथा कोशिश की जा रही है कि इन गांवों के पिछड़े हुए ग्रामीणों को विकास की मुख्य धारा में शामिल किया जाय.

इन क्षेत्रों में पूर्व में विभाग अथवा अन्य गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित की गयी योजनाओं के तहत समूहों का गठन किया था, जो कतिपय कारणों से ठीक नहीं चल पा रहे हैं अथवा निष्क्रिय हो चुके थे, विशेषतौर से स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत गठित समूह. गांवों में भ्रमण उपरान्त देखा गया कि इन निष्क्रिय समूहों की कुछ महिलाऐं बड़े जोश के साथ समूहों में शामिल हुई थी और अच्छा कार्य कर सकती थी, लेकिन विभागीय व गैर सरकारी संगठनों की नियमित मोनिटरिंग न हो पाने की वजह से ये समूह निष्क्रिय होते गये. संस्था द्वारा इन समूहों से बातचीत उपरान्त ही कुछ समूहों को परियोजना कार्य हेतु चयनित किया गया.

क्योंकि मित्र संस्था भी इस क्षेत्र में लगभग 5–6 वर्षो से कार्य कर रही है, जिसके चलते संस्था की इस क्षेत्र व इन समूहों के बारे में अच्छी जानकारी थी, इस हेतु संस्था को नये गांव व समूहों के चयन में पूर्वानुभवों का लाभ लिया गया.

आवश्यकतानुसार नये समूहों का अधिग्रहण कार्य

संस्था द्वारा प्रथम चरण में 25 स्वयं सहायता समूह के मध्य इस परियोजना के तहत कार्य किया गया, जिसमें से 22 समूह अधिग्रहित व 03 नये समूहों का गठन किया गया. द्वितीय चरण में संस्था द्वारा परियोजना के तहत 40 समूहों के मध्य कार्य किया जाना था, इस हेतु संस्था द्वारा परियोजना के तहत जैंती क्षेत्र में 15 नये समूह का अधिग्रहण कार्य किया गया.

गांव स्तरीय जागरुकता मिटिंग एवं निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम तिथि से पूर्व प्रशिक्षणों की तैयारी

परियोजना के तहत चयनित स्वयं सहायता समूह की संस्था कार्यकत्ताओं द्वारा प्रत्येक माह ग्राम स्तरीय मिटिंग का आयोजन किया गया, बैंठक का मुख्य उद्‌देश्य सदस्यों का समूहों की धारणा के बारे में बेहतर सोच विकसीत करना, सामाजिक, शिक्षा इत्यादि में वार्ता करना रहा है.

साथ ही इन मिटिंग में सदस्यों की सदस्यता शुल्क जमा करना, आन्तरिक लेन–देन निर्धारण करना, ग्रेडिंग, सी.सी.एल., वित्त पोषण इत्यादि बिन्दुओं पर भी वार्ता की गयी.

परियोजना के तहत कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया. इन प्रशिक्षणों हेतु उचित लाभार्थियों के चयन हेतु भी संस्था कार्यकत्ताओं द्वारा लगातार संस्था सदस्यों से सम्पर्क बनाये रखा. प्रशिक्षण स्थल व अवधि हेतु भी समूहों सदस्यों की आपसी राय मशवरे ली गयी.

स्वयं सहायता समूह ओरियेन्टशन कार्यशाला

परियोजना के तहत द्वितीय किस्त के सापेक्ष संस्था द्वारा स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों हेतु 02 दिवसीय दो ओरियेन्टेशन कार्यशालाओं का आयोजन काण्डे व तोली में दिनाक 23.11.2006 व 12.05.2007 को किया गया. कार्यशाला में 08 स्वयं सहायता समूहों की 63 महिलाओं सहित 82 लोगों द्वारा प्रतिभाग किया गया.

एन.जी.ओ., एस.एच.जी. व बैंकर्स ओरियेन्टेशन कार्यशाला

परियोजना के तहत स्वयं सहायता समूह, एन.जी.ओ. व बैंक के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने हेतु एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाना था. संस्था द्वारा कार्यशाला आयोजन की अवधि दिनांक 05–06 अप्रैल,2007 के मध्य निर्धारित की गयी थी. जिस हेतु संस्था द्वारा जैंती क्षेत्र में कार्यशाला स्थल चयन के साथ–साथ बैंक अधिकारियों से भी कार्यशाला में प्रतिभाग करने हेतु सहमति ली जा चुकी थी. परन्तु जिला विकास प्रबन्धक (नाबार्ड), अल्मोड़ा के पिताजी की आकस्मिक मृत्यु से कार्यशाला को स्थगित किया गया. संस्था द्वारा अब इस कार्यशाला को जून,2007 में आयोजित किया जायेगा.

सब्जी एवं फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण

परियोजना के तहत एक 02 दिवसीय प्रशिक्षण सब्जी व फल प्रसंस्करण विषय पर किया जायेगा. प्रशिक्षण की अवधि 25–26.06.2007 के मध्य रखी गयी है.

जैविक खाद निर्माण सम्बन्धी प्रशिक्षण

परियोजना के तहत जैविक खाद निर्माण सम्बन्धी तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्था द्वारा बरम, जैंती में दिनांक 10–12 अक्टूबर,2006 के मध्य आयोजित किया गया. प्रशिक्षण में 05 स्वयं सहायता समूहों की 25 महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया. प्रशिक्षण में ट्रेनिंग के साथ–साथ प्रदर्शन व क्षेत्र भ्रमण पर भी विशेष ध्यान दिया गया. वर्तमान समय में इस कार्य को बढ़ाने हेतु संस्था द्वारा इन महिलाओं को समय–समय पर इस विषय की उपयोगिता को बताया जाता रहा है. साथ ही संस्था अन्य विभागीय व गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित की जा रही योजनाओं से भी महिलाओं को जोड़ने की संस्था कोशिश लगातार है.

प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट प्रशिक्षण

परियोजना के तहत संस्था द्वारा प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं वाटर मैनेजमेन्ट विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन चायखान, लमगड़ा में दिनांक 10–12 नवम्बर,2006 के मध्य आयोजित किया गया. प्रशिक्षण में ट्रेनिंग के साथ–साथ प्रर्दशन कार्य भी किय गये, जिसके तहत श्रीमती बसन्ती देवी . के वहां पालीहाउस व श्रीमती हरुली देवी के वहां एल.डी.पी.ई. टैंक का प्रदर्शन कार्य किया गया.

फूलों की खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण

परियोजना के तहत 02 दिवसीय फूलों की खेती सम्बन्धी प्रशिक्षण दिनांक 01–02 जुलाई,2007 के मध्य किया जाना प्रस्तावित है.

जागरुकता सांस्कृतिक कार्यक्रम कठपुलती कार्यक्रम

स्वयं सहायता के सदस्यों व अन्य ग्रामीणों को महिला मुद्दो, कार्यबोझ मुक्ति, सामाजिक मुद्दे इत्यादि विषय पर जागरुक करने हेतु कठपुलती कार्यक्रम किये जाने प्रस्तावित हैं. यह कार्यक्रम मई से जुलाई,2007 के मध्य किये जाने प्रस्तावित हैं, जिसमें से 08 कार्यक्रम जैंती व 04 कार्यक्रम लमगड़ा क्षेत्र में किये जायेंगे.

आवश्यकतानुसार दीवार लेखन कार्य

परियोजना के तहत परियोजना के प्रचार–प्रसार व जन जागरुकता हेतु दीवार लेखन कार्य किया जाना प्रस्तावित है. यह कार्य जैंती क्षेत्र में मई–जून,2007 के मध्य किया जायेगा.

समूहों का बैंक से जुड़ाव, ग्रेडिंग, सी.सी.एल. में सहायता

संस्था द्वारा सभी अधिग्रहित व गठित समूहों को बैंक के साथ जुड़ाव में सहायता की गयी, जिसके तहत नव गठित समूहों के बैंक में खाते खुलवाये जा चुके हैं साथ ही जिन अधिग्रहित समूहों का बैंक के साथ ठीक सम्बन्ध स्थापित नहीं थे व खोत ठीक से नहीं चलाये जा रहे थे, उन्हें सुव्यवस्थित किया गया.

परियोजना के तहत संस्था द्वारा 02 समूहों का गठन किया गया है, जिसमे से संस्था द्वारा 01 समूहों की ग्रेडिंग करवायी जा चुकी है तथा 01 समूह की सी.सी.एल. भी निर्धारित की जा चुकी है.

इसी के साथ संस्था द्वारा अधिग्रहित 38 समूहों का परियोजना में अधिग्रहित उपरान्त 04 समूहों की ग्रेडिंग की जा चुकी है, 13 समूहों की सी.सी.एल. निर्धारित की जा चुकी है तथा 10 समूहों का वित्त पोषण कार्य किया जा चुका है.

एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन

संस्था द्वारा परियोजना के तहत 03 एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन का कार्य किया जाना था, जिसके तहत संस्था द्वारा वर्तमान समय में सभी लाभार्थियों का चयन किया जा चुका है व टैंक निर्माण हेतु शीट क्रय की जा चुकी है. इसके सापेक्ष एक लभार्थी का टैंक निर्माण हेतु गड्डा भी खोद जा चुका है, जिसमें शीट विछवाने का कार्य प्रगति पर है. शेष टैंक निर्माण हेतु लभार्थियों उचित दिशा–निर्देश दिये जा चुके हैं तथा इनका निर्माण कार्य भी शीघ्र प्रारम्भ किया जा रहा है.

पालीहाउस प्रदर्शन

परियोजना के तहत बेमौसमी सब्जी उत्पादन हेतु 02 पालीहाउस का प्रदर्शन किया जाना है, इसके तहत लभार्थियों का चयन किया जा चुका है. चयनित लभार्थी श्रीमती दीपा देवी बैगनियां को पालीहाउस की शीट तकनीकी व्यक्ति द्वारा ढांचे के अनुरुप चिपकाकर दी जा चुकी है तथा पालीहाउस एक सप्ताह के भीतर तैयार हो जायेगा. अन्य पालीहाउस हेतु लाभार्थी द्वारा स्थान की साफ सफाई के लकड़ियां एकत्र की जा चुकी है, साथ ही संस्था द्वारा पालीहाउस निर्माण हेतु लाभार्थी को पालीशीट उपलब्ध करायी जा चुकी है.

चैपकटर प्रदर्शन

परियोजना के तहत महिला कार्यबोझ कम करने हेतु 05 चैपकटर का प्रदर्शन किया जाना है, जिसके तहत चैपकटर का क्रय कर लमगड़ा लाये जा चुके हैं तथा लाभार्थियों का इन्हें ले जाने हेतु दिशा–निर्देश दिये जा चुके हैं.

नाद प्रदर्शन निर्माण

पहाड़ में जनवरों को घास खुले में खिलाये जाने की परम्परा है, जिसमें काफी मात्रा में घास बरबाद हो जाती है तथा महिला का कार्यबोझ बड़ता रहता है. इसे कम करने हेतु संस्था द्वारा ग्रामीणों को एक स्थान व नाद निर्माण कर उसमें घास खिलवाने हेतु ग्रामीणों को जागरुक किया गया. इसके तहत संस्था द्वारा परियोजना के तहत 02 नाद निर्माण प्रदर्शन प्रस्तावित थे, परन्तु संस्था द्वारा जैंती क्षेत्र में 02 के स्थान पर 04 नाद उसी धनराशि में बनाये जा रहे है. इस हेतु अधिकांश कार्य पूर्ण किया जा चुका है.

वर्मी कम्पोस्ट प्रदर्शन निर्माण

संस्था द्वारा परियोजना के तहत जैविक खाद को बढ़ावा देने हेतु वर्मी कम्पोस्ट पिटों का निर्माण कार्य किया जा रहा है, जिसके तहत 04 पक्के पिट प्रदर्शित किये जा रहे है. इन पिटों के लाभार्थियों चयन किया जा चुका है. ये पिट लगभग तैयार हो चुके है, ये पिट ईट के पक्के ढांचे से बनाये गये हैं.

बी.डी.हीप कम्पोस्ट निर्माण

जैविक खाद के तहत संस्था द्वारा तीन बी.डी.हीम कम्पोस्ट का निर्माण जैती क्षेत्र में अक्टूबर,2006 किया गया. यह खाद तैयार होकर खेत में डाली जा चुकी है. अब लाभार्थियों को इसका प्रभाव देखने की तीव्र इच्छा है.

अभिसरण गतिविधियां

किसी भी गतिविधि को संचालित करने हेतु किसी भी परियोजना के पास सीमित संसाधन व क्षेत्र होता है. इसी प्रकार इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के उद्देश्य की प्राप्ति होती मित्र संस्था के पास सीमित अर्थ सहायता व स्टाफ है. इस हेतु संस्था लाभार्थियों को और जागरुक व लाभा दिलाने हेतु अन्य योजनाओं से भी अभीसरण कार्य कर रही है. जिसके तहत संस्था द्वारा विकास खण्ड स्तर से संचालित की जा रही स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत महिलाओं को लाभ दिलाया जा रहा है. जिसके तहत संस्था द्वारा 13 समूहों की सी.सी.एल. निर्धारित की जा चुकी है व 10 समूहों का वित्त पोषण कार्य किया जा चुका है. जिसके तहत समूह को अपनी आयसृजक गतिविधि संचालित करने में काफी सहायता महसूस हो रही है, 13 समूहों को सी.सी.एल. के तहत 325000 धनराशि उपलब्ध करायी गयी है. साथ ही 10 समूहों को वित्त पोषण के तहत 2650000 रुपये उपलब्ध कराये जा चुके हैं. अभी भी अधिकांश महिलाओं द्वारा इन धन का उपयोग पशुपालन कार्य हेतु ही किया जा रहा है.

आजीविका सुधार परियोजना के तहत भी कुछ समूहों को महिला कार्यबोझ कम करने हेतु उन्नत कृषि यंत्र प्रदर्शित किये गये, साथ ही आयसृजक गतिविधि करने हेतु क्रायलर प्रदर्शन, पाली टर्नन प्रदर्शन इत्यादि कार्य भी समय–समय पर कराये गये.

हरियाली योजना के तहत भी कुछ गांवों में नैपीयर घास प्रदर्शन, वर्मी कम्पोस्ट निर्माण व फलदार/ जंगली पौध प्रदर्शद इत्यादि कार्य समय–समय पर करवाये गये.

विकास खण्ड स्तरीय कृषि विभाग, उद्यान विभाग, पशुपालन इत्यादि विभागों से महिलाओं को उन्नत कृषि बीज, सब्जी बीज, पालीहाउस, उन्नत गाय प्रदर्शन इत्यादि कार्य भी करवाये गये.

पशुओं के उचित उपचार हेतु संस्था द्वारा आजीविका परियोजना के माध्यम से ग्राम आनुली में पशु मेले का आयोजन किया गया. पशु मेले में परियोजना पदाधिकारियों सहित पशु

चिकित्साधिकारी द्वारा ग्रामीणों को उन्नत पशुओं, पशुओं में लगने वाली बिमारी, महिला कार्यबोझ करने करने हेतु पशुनाद / चैपकटर इत्यादि के बारे मे महिलाओं को जानकारी दी गयी.
साथ ही संस्था द्वारा परियोजना के तहत चयनित विभिन्न गांवों में लक्ष्मी आश्रम, कौसानी द्वारा बनायी गयी दराती व कुदाल ग्रामीण महिलाओं को फुल कीमत पर उपलब्ध करवायी गयी. इसके अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं तथा अन्य महिलाओं की भी उन्हें खरीदने हेतु मांग आ रही है.

अभीसरण गतिविधि के तहत संस्था द्वारा विकास खण्ड स्तर पर 08 मार्च,2007 को एक विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन में लगभग 450 महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया. महिला सम्मेलन में अनेक विभागीय व गैर विभागीय व्यक्तियों द्वारा महिलाओं को महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराया गया. मुख्य रुप से जिला कार्यक्रम अधिकारी, अल्मोड़ा द्वारा जिले में संचालित की जा रही गतिविधियों से अवगत कराया गया, कु. नीतू कपकोटी, अधिवक्ता द्वारा कानूनी जानकारी दी गयी व कु. मनीषा सिजवाली द्वारा कन्या भ्रूण हत्या सम्बन्धी जानकारी से महिलाओं को अवगत कराया गया. इसके अतिरिक्त खण्ड विकास अधिकारी लमगड़ा, ब्लाक प्रमुख लमगड़ा, जिला प्रबन्धक आजीविका अल्मोड़ा, जिला प्रबन्धक आत्मा परियोजना, प्रभारी उद्यान सदल दल लमगड़ा इत्यादि ने भी अपने–अपने स्तर से महिलाओं का जागरुक करने का भरसक प्रयास किया गया.

स्वयं सहायता समूहों की
महिलाओं हेतु
जैविक खाद पर कौशल विकास

प्रस्तावना

भारत वर्ष में हरित क्रान्ति ने कृषि व्यवस्था में कई परिवर्तन किये हैं. जिसके दुष्परिणाम स्वरुप कृषकों के समक्ष भूमि की उत्पादन क्षमता में ह्रास, पर्यावरण की हानि, जल स्रोत का दोहन, खतरनाक रसायनों के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ते दुष्प्रभाव आदि चुनौतियां सामने उभर कर आयी हैं. लगातार रासायनिक खादों व कीटनाशकों के प्रयोग से जहां एक ओर भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास हुआ वहीं दूसरी ओर इस पद्धति से उत्पादित फसल से कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप भी बढ़ रहा है. नब्बे के दशक में लोगों में रासायनिक खेती से मनुष्य और प्रकृति में हो रही

हानियों के सम्बन्ध में जागरुकता का स्तर बढ़ा. अतः वर्तमान समय में रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों से मुक्त होने के लिए मात्र एक विकल्प है ***'जैविक कृषि'***. जैविक कृषि के परिप्रेक्ष्य में पिछले पांच वर्षो के दौरान आयी जागरुकता का परिणाम यह है कि आज केन्द्र व विभिन्न राज्य सरकारें जैविक खेती के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न परियोजनाओं का संचालन कर रही है. हमारा राज्य उत्तरांचल देश का पहला ऐसा राज्य है जहां राज्य सरकार ने जैविक कृषि बतौर शासकीय नीति के रुप में स्वीकार किया है.

वर्तमान कृषि पद्धति में रासायनिक खादों व कीटनाशकों के अनियंत्रित उपयोग ने खेत की मिट्टी एवं प्राकृतिक कृषि संसाधनों को अपूरणीय क्षति पहुंचाई है, रसायनों के अधिक उपयोग से खेती की मिट्टी में

कुदरती तौर पर मौजूद सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो रहे है. यह जीवाणु ही मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है. इनके नष्ट होने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति ही कम नही हुई बल्कि मिट्टी

कठोर भी हो रही है. कठोर मिट्टी में पौधों की जडें आसानी से नही फैल पाती है और इसी वजह से पौधों को मिट्टी में मौजूद पोषक तत्व भी उचित और पर्याप्त मात्रा में नही मिल पाते है. सिंचाई का पानी भी कठोर मिट्टी पर अधिक समय तक ठहर नहीं पाता है और व्यर्थ बह कर निकल जाता है. इसी कारण से भू–जल स्तर कम हो रहा है. मिट्टी के नरम रहने से पानी अधिक समय ठहरता है और नीचे उतर कर भू–जल की वृद्धि भी करता है.

रासायनिक खाद ने कृषि पर होने वाले व्यय में भी अतुलनीय वृद्धि की है तथा लगातार उत्पादन व उत्पादित फसल की गुणवत्ता में भी गिरावट आ रही है. रासायनिक खाद के उपयोग से खेती मंहगी हो रही है और जमीने कम उपजाऊ. फसलों की बीमारियो से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो रही है, इसलिये किसानों को हर साल फसलों पर हमला करने वाली नई–नई बिमारियों से लड़ने पर बहुत खर्च करना पड़ता है. साथ ही आज जल स्तर में गिरावट के साथ पर्यावरण व मानव शरीर पर हो रहे कुप्रभाव सामने आने लगे हैं. उपरोक्त समस्याओं से कृषकों को मुक्ति प्रदान करने की दिशा में 'मित्र' संस्था प्रयासरत है. जैविक खाद उपयोग से ना सिर्फ कृषि व्यय में कटौती की जा रही है, अपितु रासायनों के उपयोग से नष्ट हुए मिट्टी के प्राकृतिक तत्वों और उर्वरा शक्ति को भी प्राप्त किया जा रहा है.

उत्तरांचल राज्य में ग्रामीण समुदाय की आर्थिक सशक्ता के लिए आवश्यक है कि उन्हें इस प्रकार के रोजगार परक कार्यक्रमों से जोड़ा जाय, जिससे वे कम समय में अधिक आय का अर्जन कर सके. इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत महिला कार्यबोझ कम करने हेतु भी जैविक कृषि एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है. इस सम्बन्ध में कई सरकारी व गैर सरकारी संगठन इत्यादि जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं.

हरित क्रान्ति के दुष्परिणामों से सबक लेते हुए उत्तरांचल के जैविक राज्य घोषित होने के बाद सीमित भूमि पर उत्पन्न कृषि उत्पादों को जैविक उर्वरकों/खाद का प्रयोग कर उच्च गुणवत्ता युक्त बनाने की दिशा में सामूहिक प्रयास किये जाने आवश्यक हैं. जैविक कृषि के सन्दर्भ में विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं का ध्यान इस ओर गया, परन्तु उत्तरांचल के पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि पर विशेषकर महिलाओं पर अधिक कार्यबोझ है. इसी महिला कार्यबोझ को कम करने के लिए मित्र संस्था, लमगड़ा (अल्मोड़ा) द्वारा तीन **दिवसीय जैविक कृषि प्रशिक्षण** का आयोजन **जैंती (बरम)** में दिनांक 10 अक्टूबर 2006 से 12, अक्टूबर 06 तक किया गया.

गांव में अक्सर देखा गया है कि लोग गोबर को घरों के पास ही एक खुले ढेर में रखते हैं. इस तरीके से खाद के आधे से ज्यादा पोषक तत्व धूप में सूख कर या वर्षा में भहकर व्यर्थ नष्ट हो जाते हैं.

किसानों से पूछने पर पता चलता है कि वे ज्यादातर पशु **गोबर खाद की उपलब्धता** के उद्देश्य से ही पालते हैं, परन्तु पर्याप्त खाद फिर भी नहीं मिल पाती और अधिक पशुओं का बोझ परिवार व वनों पर बढ़ता है, जिससे किसानों की स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहती है. इससे विशेषकर परिवार की महिलाऐं ही अधिक कार्यबोझ का शिकार होती है और ग्रामीण महिलाओं का इससे स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है.

एक ओर रासायनिक खादों व कीटनाशकों के प्रयोग सें जहां एक ओर भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास हुआ वही दूसरी ओर इस पद्वति से उत्पादित फसल से कई प्रकार की बीमारियो का प्रकोप भी बढ़ता जा रहा है. जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए नाबार्ड द्वारा यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है. इस प्रशिक्षण के द्वारा उनके खेतो मे जैविक खेती की तकनीको के बारे मे प्रशिक्षित गया.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में **वर्मी कम्पोस्ट** (केंचुओं से बनी खाद), **नाडेप**, **बायोडायनामिक कम्पोस्ट हीप, ईएम** इत्यादि तकनीकों द्वारा उन्नत कृषि के गुर किसान भाईयों/महिलाओं को सिखाये गये. सीमित कृषि क्षेत्र तथा बढ़ती हुई बेरोजगारी को ध्यान में रखते हुए जैविक विधियों से सब्जियों/फलों में आशातीत परिवर्तन देखे जा सकते हैं तथा यह कार्यक्रम स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए भी कारगर साबित होगा.

इस कार्यक्रम में जैविक तकनीकियों को फील्ड स्तर पर भी दिखाया गया ताकि जैविक खेती के प्रति सभी लोगों का ध्यान इस ओर आये. जैविक कृषि के प्रसार की परिकल्पना तब तक साकार रूप नहीं ले सकती जब तक आम कृषक को जैविक उर्वरक के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत व सुलभ जानकारी उपलब्ध ना हो. अतः इस कार्यक्रम के द्वारा कृषक भाई अपने खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के प्रति अवश्य आगे आयेगें. इस कार्यक्रम से बड़ी ही सरलता व सीमित संसाधनों से जैविक खाद का उत्पादन आम कृषक आसानी से कर सकता है.

हमारा मुख्य ध्येय किसान भाई जैविक कृषि की ओर अग्रसर हो, अपने व परिजनों के स्वास्थ्य की रक्षा कर सकें तथा इसे लघु उद्यम के रूप में अपना कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकें, तो हमारा प्रयास सफल माना जायेगा.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य उद्‌देश्य निम्न बातों को ध्यान रखकर स्थानीय संसाधनों के बेहतर प्रबन्धन द्वारा टिकाऊ उत्पादकता प्राप्त कर स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को सुधारना है–

- स्वयं सहायता समूहों की समझ विकसित करना
- प्राथमिक संसाधनों के विकास की एक ऐसी रणनीति तैयार करना, जिसके ग्रामीण अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन उद्‌देश्यों की पूर्ति सहजता से कर सकें.
- बेहतर भू–उपयोग एवं उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि करना.
- भूमि की नमी बरकरार रखना व जल स्तर बढ़ाना
- रासायनिक खाद व कीटनाशकों के उपयोग से मनुष्य व पर्यावरण को हो रहे नुकसान से बचाना.
- जैविक खाद की उन्नत तकीनीकों से कृषि पद्वतियों का विकास करना.

प्रशिक्षण स्थल

बरम (जैती), विकास खण्ड लमगड़ा

प्रशिक्षण अवधि

10 से 12 अक्टूबर,2006

लक्ष्य

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी अनुसूचित जाति / गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं का जैविक खाद प्रशिक्षण कार्यक्रम से क्षमता विकास करना.

उद्देश्य

वर्तमान परिस्थितियों निम्नानुसार कई प्राकृतिक एवं मानवजनित स्थितियां हैं जो कार्यक्रम संचालन को प्रभावित करती हैं–

- जागरुकता का अभाव
- सहभागिता का अभाव
- पर्वतीय भौगोलिक परिवेश
- संवेदनशील पर्यावरण
- तकनीकी जानकारी व उपयुक्त मानव क्षमता का अभाव
- सही जानकारी की अनुपब्धता
- अनुपयोगी व अकुशल विकासात्मक ढांचा, भ्रष्टाचार

उपरोक्त विन्दुओं को ध्यान में रखकर 'मित्र' संस्था द्वारा इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के सहयोग से 'स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं हेतु जैविक खाद' विषय पर दस दिवसीय प्रशिक्षण संचालित किया गया, जिसमें निम्नानुसार विषयों को समायोजित किया गया–

1. स्वयं सहायता समूह क्या है, समूह का लेखा रखरखाव व प्रबन्धन, नेतृत्व विकास, संवाद, विवाद प्रबन्धन
2. बैंक से जुड़ाव व सी.सी.एल. इत्यादि
3. सम्भावित आय सृजक गतिविधियां
4. जैविक खाद क्या है, जैविक खाद के प्रकार, जैविक खाद बनाम रासयनिक खाद, जैविक खाद ही क्यों, कुरमुला नियंत्रण, फैरोमोन ट्रैप इत्यादि.
5. नैडप कम्पोस्ट, काऊ पैट पिट, वर्मी कल्चर, बी.डी. हीप इत्यादि

कार्यक्रम संरचना

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रुप से निम्न विषयों को समायोजित किया गया–

1. स्वयं सहायता समूह क्या है, समूह का लेखा रखरखाव व प्रबन्धने, नेतृत्व विकास, संवाद, विवाद प्रबन्धन
2. बैंक से जुड़ाव व सी.सी.एल. इत्यादि
3. सम्भावित आय सृजक गतिविधियां
4. जैविक खाद क्या है, जैविक खाद के प्रकार, जैविक खाद बनाम रासयनिक खाद, जैविक खाद ही क्यों, कुरमुला नियंत्रण, फैरोमोन ट्रैप इत्यादि.
5. नैडप कम्पोस्ट, काऊ पैट पिट, वर्मी कल्चर, बी.डी. हीप इत्यादि

प्रशिक्षण विधि

दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को सहभागी बनाने हेतु निम्न विधियों को अपनाया गया–

1. लैक्चर
2. वार्ता
3. अनुभवों का आदान–प्रदान
4. प्रदर्शन
5. केस स्टडी / कहानियां

6. फिल्म शो

रिसोर्स पर्सन

1. श्री सुरेश अधिकारी
सचिव
'मित्र' संस्था, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तरांचल

2. श्री कमलेश जोशी
आल्मा काटेज कम्पाउण्ड
नैनीताल, उत्तरांचल

3. श्री दीपक तिवारी
स्पेशल टाउनशिप, कमलुआगांजा
हल्द्वानी, नैनीताल

4. कु. प्रेमा बर्गली
'मित्र' संस्था, लमगड़ा, अल्मोड़ा

5. श्री खीम सिंह नागरकोटी
'मित्र' संस्था, लमगड़ा, अल्मोड़ा

6. श्री भवान सिंह मेवाड़ी
शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक
पुभांऊ, लमगड़ा

प्रशिक्षण के तहत वितरित पाठ्य सामग्री

1. स्वयं सहायता समूह जानकारी
2. नाडेप कम्पोट विधि
3. वर्मी कम्पोस्ट विधि
4. बी.डी.हीप विधि
5. सी.सी.पी. कम्पोस्ट विधि

प्रतिभागिता

प्रशिक्षण में कुल 55 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें 43 स्वयं सहायता समूहों की महिलाऐं, 04 'मित्र' संस्था प्रतिनिधि, 02 विभागीय अधिकारी, 02 जन प्रतिनिधि तथा 02 प्रशिक्षकों ने प्रतिभाग किया.

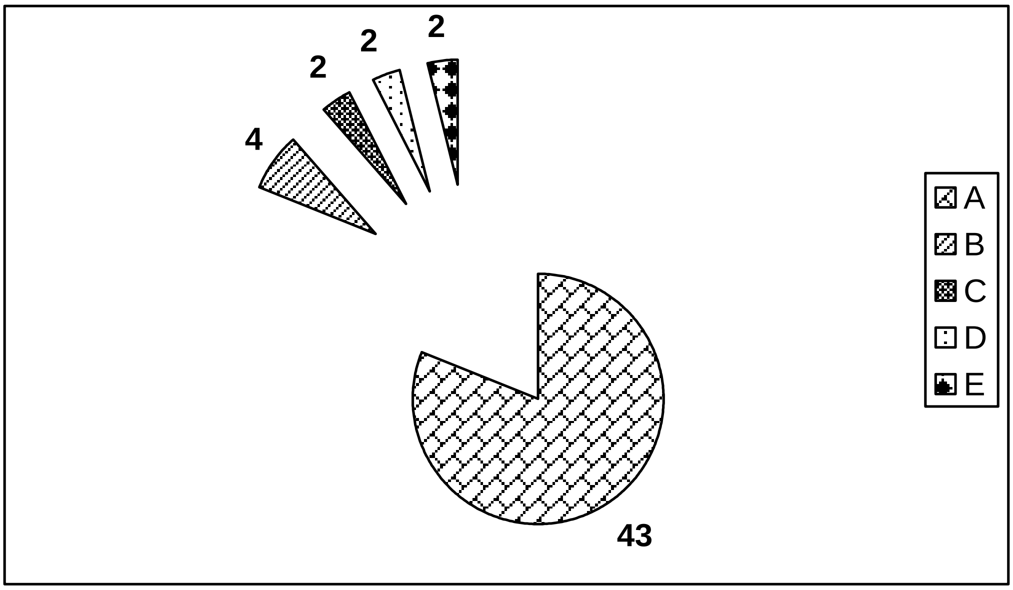

। स्वयं सहायता समूहों की महिलाऐं
ठ मित्र संस्था प्रतिनिधि
ब विभागीय अधिकारी
क अन्य प्रशिक्षक
म जन प्रतिनिधि

स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं हेतु प्रौटेक्टेड कल्टीवेशन एवं जल संग्रहण पर कौशल विकास

प्रस्तावना

उत्तरांचल के अधिकांश पर्वतीय क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था आज भी खेती पर आधारित है जो कि नाजुक पर्यावरणीय परिस्थितियों में की जाती है. प्रदेश में सिचिंत खेती का क्षेत्रफल काफी कम है. यहां जाड़ो में पाला, वर्षा ऋतु में अत्यधिक वर्षा और ग्रीष्म ऋतु मे ओलावृष्टि के चलते फसल, सब्जी व फल का उत्पादन कार्य जोखिम से भरा रहता है और वर्तमान में विभिन्न कारणों से इस क्षेत्र का पारस्थितिकीय तन्त्र असन्तुलित होता जा रहा है. यहां के संसाधनों के निरन्तर अविवेकपूर्ण दोहन व स्पष्ट विकास निति के अभाव मे यहां के पर्यावरण को काफी नुकसान हुआ है.

साथ ही पानी भी पृथ्वी पर जीवन का आधार है व मानव के विकास का प्रमुख स्रोत है. यहां पर सैकड़ों पर्वत श्रृखलाऐं और लाखों की संख्या मे जल स्रोत हैं, परन्तु एशिया का वाटर टावर कहे जाने वाले हिमालय क्षेत्र मे पिछले कुछ दशकों में पानी से

सम्बन्धित समस्यायें लगातार बढ़ रही है, ग्लेशियर सिकुड़ रहे है और जल स्रोतों के सूखने से पेयजल एवं सिचाई हेतु उपयोग होने वाले जल का संकट गहराता जा रहा है. उपलब्ध सम्पूर्ण जल का लगभग 97 प्रतिशत भाग समुद्र है जो कि लवणता के कारण उपयोग रहित है, जबकि मात्र 2.5 प्रतिशत जल ध्रुवीय वर्फ व ग्लेशियर के रुप में उपलब्ध है व केवल 1 प्रतिशत जल ही उपयोग में लाया जा सकता है.

पहाड़ के ज्यादातर गांवों से पुरूष अपनी आजिविका की पूर्ति के लिए शहरों की ओर पलायन कर चुके हैं. जिससे महिलाओं पर कार्य का बोझ बढ़ गया है. उत्तरांचल की महिलाओं एवं बच्चों के जीवन स्तर मे काफी गिरावट आयी है. महिलाओं का अधिकतर समय जंगल से दैनिक उत्पादों को इकट्ठा करने, पानी, खेती एवं पशुपालन के कार्यो में खर्च हो जाता है. उत्तरांचल में इस बढ़ते पलायन और घटते जल स्तर को बचाने के लिए आवश्यक है ग्रामीणो को आयसर्जक एवं तकनीकी ज्ञान देना. जिससे वे एक ओर तो कम समय मे अधिक उत्पादन कर आय में वृद्वि कर सके और दूसरा इस पृथ्वीं से उपयोगी जी के समाप्त होते अस्तित्व को बचा सके. सरकार, गैर सरकारी संगठन व अन्य संस्थाऐं इस ओर प्रयासरत है.

पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि एवं उद्यान सम्बन्धी गतिविधियों को प्रोत्साहित करना चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है. कृषक मेहनत कर खेतों में विभिन्न कार्य करते है, किन्तु समय पर सिंचाई न होने के कारण या तो पैदावार होती ही नही या फिर उत्पादन ना के बराबर होता है. सर्वविदित है कि औद्यानिकी गतिविधियों में सिंचाई की आवश्कता रोपण से लेकर फसल तैयार होने तक रहती है और बगैर उपयुक्त नमी के आशातीत उत्पादन भी सम्भव नहीं है.

पारम्परिक रुप से खेती पर ही अत्यधिक निर्भरता के चलते जहां ग्रामीण पर्वतीय क्षेत्रों में औद्यानिकी का प्रचार–प्रसार का प्रयास आयवर्धन के लक्ष्यों के साथ किया गया, वही इसके साथ ही सब्जियों की खेती और फल उद्यानों के लिए सिंचाई की आवश्कताओं में भी वृद्धि हुई है. इस दिशा में सम्पादित अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि औद्यानिकी के कार्यो के लिए बढ़ती सिंचाई की मांग ने कृषकों, विशेषकर महिलाओं के श्रम में खासी वृद्धि की है.

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि कुल वर्षा का भी 80 प्रतिशत भाग बरसातों के चार माह में बरस जाता है, जिसका उपयोग स्थानीय किसान आंशिक रुप से ही कर पाते हैं, जबकि शेष समय में फसलें कुप्रभावित हो जाती है. वर्षा के दौरान भी अधिकांश जल, संग्रहण की उचित व्यवस्था न होने के कारण ढालू जमीन पर बह जाता है. पहाड़ी नदियों का पानी घाटी क्षेत्रों में तो प्रयोग किया जाता है किन्तु ऊंची पहाड़ियों में इसका प्रयोग सम्भव नहीं होता है.

वर्तमान में राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में प्रायः सीमेन्ट टैंक, जिसे आमतौर पर सिंचाई हौज के नाम से जाना जाता है, का निर्माण सतही जल के संग्रहण की सबसे प्रचालित तकनीक के रुप में सामने आता है. किन्तु जब लागत लाभ के अनुपात के दृष्टिकोण से सीमेन्ट टैंक की उपयोगिता को आंका जाये तो स्पष्ट होता है कि कई नयी और कम लागत तकनीकों के उपयोग से जल संग्रहण में सफलता प्राप्त करने के साथ ही धनराशि की सीमित उपलब्धता से ही अधिक संख्या में कृषकों को लाभान्वित किया जाना सम्भव हो सकता है. इसी प्रकार की एक नयी और कम लागत तकनीक में एल.डी.पी.ई. शीट का प्रयोग औद्यानिकी विकास के क्षेत्र में लोकप्रिय हो रहा है.

यदि वर्षा के जल को संरक्षित किये जाने की विभिन्न तकनीक जो या तो सदियों से चली आ रही हैं, जैसे खाल या फिर विभिन्न संस्थानों द्वारा विकसीत की गयी तकनीकों जैसे एल.डी.पी.ई. टैंक इत्यादि अपनाये जाय, तो एक ओर तो फसल को सिंचाई के लिए साधन उपलब्ध हो जायेगे और व्यर्थ जा रहा वर्षा का पानी का भी उपयोग हो सकेगा. वर्षा जल संग्रहण टैंक बनाने से कृषक अपने समय एवं धन की बचत कर सकते हैं, क्योंकि टैंक बनाने से उसमें वर्षा का जल संरक्षित करने के अलावा कृषक अपने उपयोग के पश्चात बचे हुए जल का घर में बाल्टियों या अन्य बर्तनों में रखने के बजाय टैंक में स्टोर किया जा सकता है जो अपने गृह बाटिका में सिंचाई या अन्य घरेलू उपयोग में आ सकता है.

औद्यानिकी के क्षेत्र में पालीहाउस इत्यादि तकनीक की सहायता से कृषक बेमैसमी सब्जी फूल, जड़ी–बूटी व सुगन्धित पौध को पाला, ओस, अत्यधिक वर्षा, ओलावृष्टि व पशुओं के नुकसान से बचाकर कम भूमि में अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं. इस तरह कृषक स्वयं के उपयोग से लिये व आय वृद्धि के लिये चीजें उगा सकता हैं. ग्रामीणों की आय में वृद्धि करने व पलायन रोकने की सोच तथा खेती को संरक्षित करने के लिए वर्तमान समय में विभाग व गैर सरकारी संगठनानें द्वारा कई परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है.

इसी सोच के तहत इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के सहयोग से 'मित्र' संस्था द्वारा दस दिवसीय प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं जल संग्रहण प्रशिक्षण का आयोजन चायखान, लमगड़ा में दिनांक 01 से 02 नवम्बर,2006 के मध्य किया गया. इस कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं को संरक्षित खेती एवं जल सवर्धन की तकनीकों की जानकारी दी गयी. साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम में फील्ड में प्रयोगात्मक रुप से भी सिखाया गया, जिसके माध्यम से वे और अधिक सीख पायें. वैसे भी मानव प्रकृति देख कर अधिक सीखने की होती है. प्रशिक्षण में पालीहाउस एवं एल.डी.पी.ई. टैंक बनाकर दिखाया गया.

इस प्रशिक्षण का उद्‌देश्य निम्नांकित बातों को ध्यान में रखकर वर्षा जल का सवर्धन करना व औद्यानिक खेती अपनाकर स्थानीय संसाधनों के बेहतर प्रबन्धन द्वारा टिकाऊ उत्पादकता प्राप्त कर स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को सुधार कर आय में वृद्धि करना है–

1. स्वयं सहायता समूहों की समझ विकसित करना
2. स्वयं सहायता समूहों को आय सृर्जक गतिविधियों हेतु प्रेरित करना.

3. अपने पास उपलब्ध भूमि एवं जल को ही नयी तकनीक से अपनाकर कृषि कार्य को बढ़ाना.
4. जल एवं जमीन को बेहतर उपयोग.
5. पानी संग्रहण की तकीनीकों का विकास करना
6. संरक्षित खेती की समझ बेहतर करना इत्यादि.
7. बैमोसमी सब्जी उत्पादन
8. बेहतर भू–उपयोग एवं उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि करना
9. प्राथमिक संसाधनों के विकास की एक ऐसी रणनीति तैयार करना, जिसके ग्रामीण अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन उद्देश्यों की पूर्ति सहजता से कर सकें.
10. भूमि की नमी बरकरार रखना व जल स्तर बढ़ाना

प्रशिक्षण स्थल

चायखान, विकास खण्ड लमगड़ा

प्रशिक्षण अवधि

01 से 03 नवम्बर,2006

लक्ष्य

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी अनुसूचित जाति/ गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं के आयोपार्जन हेतु पालीहाउस निर्माण एवं जल संग्रहण की विधियों की जानकारी देकर उनकी क्षमताओ को विकास करना.

उद्देश्य

वर्तमान परिस्थितियों निम्नानुसार कई प्राकृतिक एवं मानवजनित स्थितियां हैं जो कार्यक्रम संचालन को प्रभावित करती हैं–

- जागरुकता का अभाव
- सहभागिता का अभाव
- पर्वतीय भौगोलिक परिवेश

- संवेदनशील पर्यावरण
- तकनीकी जानकारी व उपयुक्त मानव क्षमता का अभाव
- सही जानकारी की अनुपब्धता
- अनुपयोगी व अकुशल विकासात्मक ढांचा
- भ्रष्टाचार

उपरोक्त विन्दुओं को ध्यान में रखकर 'मित्र' संस्था द्वारा इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के सहयोग से *'स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं हेतु प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन एवं जल संग्रहण'* विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण संचालित किया गया, जिसमें निम्नानुसार विषयों को समायोजित किया गया–

- स्वयं सहायता समूह क्या है, समूह का लेखा रखरखाव व प्रबन्धन, नेतृत्व विकास, संवाद, विवाद प्रबन्धन
- बैंक से जुड़ाव व सी.सी.एल. इत्यादि
- सम्भावित आय सृजक गतिविधियां
- पालीहाउस के माध्यम से बेमैसमी सब्जी का उत्पादन
- एल.डी.पी.ई. टैंक के माध्यम से जल संग्रहण

कार्यक्रम संरचना

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य रुप से निम्न विषयों को समायोजित किया गया–

1. स्वयं सहायता समूह क्या है, समूह का लेखा रखरखाव व प्रबन्धन, नेतृत्व विकास, संवाद, विवाद प्रबन्धन
2. बैंक से जुड़ाव व सी.सी.एल. इत्यादि
3. सम्भावित आय सृजक गतिविधियां
4. पालीहाउस
5. पालीहाउस की आवश्यकता एवं उपयोगिता, पालीहाउस का उपयोग सब्जियों का चुनाव, शस्य क्रियाएं एवं फसलों की देखभाल, पादप हारमोन्स का प्रयोग एवं फसल चक्र
6. पालीहाउस में व्यवसासिक सब्जियों की नर्सरी.
7. पानी का संग्रहण एवं एल.पी.डी. टैंक.

8. महासंध के विषय में जानकारी.

प्रशिक्षण विधि

दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को सहभागी बनाने हेतु निम्न विधियों को अपनाया गया–

1. लैक्चर
2. वार्ता
3. अनुभवों का आदान–प्रदान
4. प्रदर्शन
5. केस स्टडी/ कहानियां
6. फिल्म शो

रिसोर्स पर्सन

1. श्री सुरेश अधिकारी
   सचिव, 'मित्र' संस्था, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तरांचल

2. श्री कमलेश जोशी
   आल्मा काटेज कम्पाउण्ड, मल्लीताल, नैनीताल, उत्तरांचल

3. श्री भुवन चन्द्र कोटलिया
   'मित्र' संस्था, लमगड़ा

4. कु. प्रेमा बर्गली
   'मित्र' संस्था, लमगड़ा

5. श्री बी.सी.जोशी
   सहायक विकास अधिकारी (उद्यान), लमगड़ा

6. डा. पंकज तिवारी
   परियोजना प्रबन्धक, चिया, नैनीताल

7. श्री सतीश जोशी
   तकनीकी सलाहाकार, चिया, लमगड़ा

8. श्री खूब चन्द्र
   शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, लमगड़ा

प्रदर्शन कार्य

प्रशिक्षण अवधि में निम्न व्यक्ति के वहां प्रदर्शन कार्य किया गया—

पालीहाउस

1. श्रीमती बसन्ती देव
   हरज्यू स्वयं सहायता समूह
   ध्यूलीधौनी, लमगड़ा

जल संग्रहण टैंक

1. श्रीमती हरुली देवी
   दुर्गा स्वयं सहायता समूह
   ध्यूली रौतेला, लमगड़ा

प्रशिक्षण के तहत वितरित पाठ्य सामग्री

1. स्वयं सहायता समूहों से सम्बन्धित जानकारी.
2. पालीहाउस निर्माण एवं उपयोगिता से सम्बन्धित जानकारी.
3. पानी संग्रहण की विधियां एवं एल.पी.डी.ई. टैंक निर्माण की जानकारी.

प्रतिभागिता

प्रशिक्षण में कुल 38 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिसमें 33 स्वयं सहायता समूहों की महिलाऐं, 02 ‘मित्र’ संस्था प्रतिनिधि, 01 विभागीय अधिकारी व 02 अन्य प्रशिक्षकों ने प्रतिभाग किया.

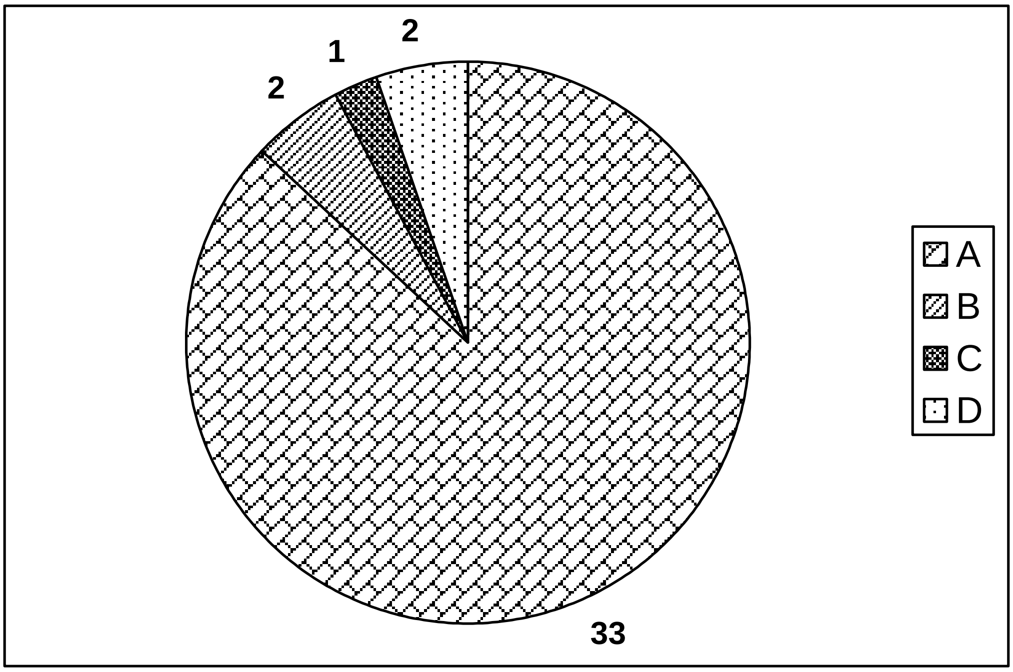

। स्वयं सहायता समूहों की महिलाऐं

ठ मित्र संस्था प्रतिनिधि

ब विभागीय अधिकारी

क अन्य प्रशिक्षक

स्वयं सहायता समूह

हेतु

दो दिवसीय

अभिमुखीकरण कार्यशाला

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत 'मित्र' संस्था द्वारा प्रथम वर्ष में अधिग्रहित किये गये स्वयं सहायता समूहों हेतु अभिमुखीकरण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में स्वयं सहायता समूहों के अतिरिक्त अन्य ग्रामीणों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्था प्रमुख श्री सुरेश अधिकारी, सन्दर्भ व्यक्ति श्री कमलेश जोशी, सुगमकर्ता कु. प्रेमा बर्गली, तथा श्री खीम सिंह द्वारा जानकारी प्रदान की गयी.

प्रशिक्षण स्थल

1. तोली, लमगड़ा
2. काण्डे, जैंती, लमगड़ा

प्रशिक्षण अवधि

1. 10–11 दिसम्बर, 2007
2. 12–13 मई, 2007

प्रथम दिवस

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस का शुभारम्भ विकास खण्ड अधिकारियों, बैंक अधिकारियों व बाल विकास विभाग के पदाधिकारियों द्वारा किया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारम्भ समूह चेतना गीत से किया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों से परिचय निम्न बिन्दुओं पर किया गया–

1. प्रतिभागी का नाम
2. समूह का नाम
3. प्रतिभागी महिला की परिवार में भूमिका
4. महिला के परिवार में सदस्यों की संख्या
5. समूह के विषय में प्रतिभागी की जानकारी
6. समूह की महत्ता पर समझ व अनुभव
7. महिलाओं द्वारा किये जाने वाले दैनिक कार्य व कार्यबोझ
8. वर्तमान समय में महिलाओं द्वारा कार्यो के निष्पादन में अपनायी जाने वाली पद्धति व तकनीकें

सभी प्रतिभागियों द्वारा अपना परिचय उपरोक्तानुसार दिया गया, इसके उपरान्त प्रशिक्षकों द्वारा स्वयं सहायता समूह की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गयी. इसके अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह क्या हैं, पर जानकारी देते हुए कहा कि जब दो या दो से अधिक लोग किसी एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु संगठित होकर कार्य करते है तो उसे समूह कहा जाता है तथा स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना के तहत पर्वतीय क्षेत्र में कम से कम 05 व अधिकतम 20 सदस्य का समूह हो सकता है. तत्पश्चात स्वयं सहायता समूह के क्या उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए प्रशिक्षकों द्वारा जानकारी दी गयी कि जैसा कि स्वयं सहायता के नाम से पता चलता है कि अपनी सहायता स्वयं करना अतः जब समूह अपनी सहायता स्वयं करने हेतु कुछ कार्य करने लगता है, तो वह स्वयं सहायता समूह कहलाता है. उन्होंने जानकारी दी कि जिस तरह एक परिवार को चलाने हेतु नियमों व अनुशासन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार स्वयं सहायता समूह अपनी एक नियमावली बनायें और उसे केवल कागजों

तक ही सीमित न रखें, वरन उस नियमावली को प्रत्येक मासिक बैठक में सभी सदस्यों के सम्मुख प्रस्तुत करें. यदि हम स्वयं सहायता समूहों के नियमों का प्रत्येक मासिक बैठक में सभी पालन करें तो हम एक आदर्श समूह बनने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ सकने में सफल हो सकते हैं.

भोजन अवकाश के उपरान्त प्रशिक्षण कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए समूह परियोजना समन्वयक एवं सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा अपना परिचय दिया गया और कहा कि परिचय सत्र के दौरान कुछ महिलाऐं अपना परिचय देते हुए हिचकिचाहट/संकोच कर रही थी. इस पर उन्हें समझाया कि अपना परिचय देते समय अथवा अपना नाम बताते समय ना तो शरमाना चाहिए और ना ही संकोच करना चाहिए, क्योंकि यही हमारी पहचान है, इसी से लोग हमें जानते हैं. इस बात को प्रस्तुत करने हेतु प्रशिक्षक द्वारा अनेक रोचक उदाहरणों एवं कहानियों द्वारा समझाने का प्रयास किया गया जो कि भविष्य में महिलाओं हेतु मार्गदगदर्शन का कार्य करेगा.

द्वितीय दिवस

द्वितीय दिवस का शुभारम्भ फिर चेतना गीत से किया गया. इसके उपरान्त प्रथम दिवस में आयोजित गतिविधियों का पुनरावलोकन किया गया. इसके उपरान्त प्रशिक्षक द्वारा निम्नानुसार परियोजना के उददेश्यों पर प्रकाश डाला गया.

परियोजना के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं विशेषकर अनुसूचित जाति व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाओं के कार्यबोझ कर करना.
2. विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से महिलाओं की क्षमताओं का विकास करना.
3. महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में अग्रसर करते हुए उनके कौशल विकास हेतु समूह या सामूहिक रूचियों के अनुरूप व्यवसाय चयन कर समूहे गटन, जागरूकता शिविरों का आयोजन, प्रशिक्षणों एवं शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन करना.
4. समूहो द्वारा उत्पादित उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु कौशल प्रशिक्षणों का आयोजन करना तथा बाजार की व्यवस्था हेतु समूहों को सहयोग करना.
5. दृष्टिकोण परिवर्तन व जेण्डर संवेदनीकरण
6. सामुदायिक बंजर भूमि एवं खेतों की मेड पर चारा एवं इधन प्रजाति का रोपण
7. पंचायत राज संस्थाओं में निर्णय प्रक्रिया के अन्तगर्त महिलाओं की सक्रिय प्रतिभागिता को बढाना

प्रशिक्षक द्वारा परियोजना की दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए जानकारी दी की परियोजना के तहत उन सशक्त महिलाओं का निर्माण किया जाना है जो निर्णय प्रकिया में प्रतिभाग कर सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक प्रगति में प्रमावी *योगदान सुनिश्चित करे.*

इसके उपरान्त प्रशिक्षक द्वारा परियोजना को रणनीतिक रूप से क्रियान्वित करने की जानकारी दी गयी–

- ग्राम व न्याय पंचायत स्तर पर महिला जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन.
- ग्राम स्तर पर महिला संगठनों व महिला स्वयं सहायता समूहों की स्थापना.
- स्वयं सहायता समूहों का बैंक से जुड़ाव इत्यादि.
- महिलाओं का कार्यबोझ कम करने हेतु सम्बन्धित प्रदर्शन
- महिलाओं का कार्यबोझ कम करने हेतु सम्बन्धित प्रदर्शन
- इन महिला संगठनों को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने हेतु उनकी रूचियों व सम्भावित सफलता का आधारभूत सर्वेक्षण.
- अशिक्षा व जागरूकता हेतु ग्राम स्तर पर शिक्षा व जागरूकता अभियान चलाया जाना.
- पूर्व में गठित स्वयं सहायता समूहों का अभिमुखीकरण व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन.
- नये समूहों का गठन व पूर्व गठित समूहों को आयसृजक गतिविधियों से जोड़ने हेतु रूचि के आधार पर प्रशिक्षण व क्षेत्र भ्रमणों का आयोजन.
- व्यवसायिक समूहों का सम्बन्धित बैंकों अथवा वित्तीय संस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करवाना.
- व्यवसायिक समूहों को बाजार उपलब्ध करवाने हेतु विकास खण्ड, जिले स्तर पर हाट मेलों का आयोजन अथवा विभिन्न विभिन्न जिला, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मेलों के माध्यम से विपणन व प्रचार प्रसार की व्यवस्था करना.
- महिला स्वयं सहयता समूहों कों महासंघ का रुप देने का प्रयास व उसका विकास.

द्वितीय दिवस में भोजनावकाश के उपरान्त समूह की सदस्याओं को उनके द्वारा किये जाने वाले दैनिक कार्यो की सूची तैयार करने को कहा गया, जिसके लिए समूह की सदस्याओं को दो समूहों में विभक्त किया गया. तद्पश्चात पाया गया कि महिलाओं की दिनचर्या सुबह 4 बजे से प्रारम्भ होती है तथा रात्रि 12 बजे तक घरेलू कार्यो में लगी रहती हैं. महिलाओ द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्य व उनमें लगने वाला औसतन समय निम्नवत बताया गया–

कम	**किये जाने वाले कार्य**	**लगने वाला समय**
1	घरेलू कार्य	03–04 घण्टे
2	चारा/ईधन संग्रहण	04–05 घण्टे
3	जल संग्रहण	02–03 घण्टे
4	कृषि कार्य	04–05 घण्टे
5	पशुपालन	02–03 घण्टे
6	अन्य	06 घण्टे

समूह कार्य के उपरान्त पाया गया कि महिलाओं का अधिकतम समय चारा ईधन व जल संग्रहण में लगता है, इसे परियोजना के तहत कुछ कम किया जाने की आवश्यकता है तथा महिलाओं को इस हेतु जागरुक भी किया जा सकता है, इस सम्बन्ध में महिलाओं से वार्ता की गयी. परियोजना के तहत इन बिन्दुओं पर अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है.

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तिम 01 घण्टे में महिलाओं हेतु खुला सत्र रखा गया. उक्त दो दिवसीय प्रशिक्षण में समूह की सदस्याओं को मुख्य रूप से उनके द्वारा किये जा रहे कार्यो व अनावश्यक कार्यबोझ को कम करने हेतु अपनायी जाने वाली विधियों के विषय में जागरूक करने के साथ–साथ परियोजना के उद्देश्यों को महिलाओं तक पहुंचाना था. प्रशिक्षण के उपरान्त पाया गया कि समूह की सदस्याओं को परियोजना के प्रति समझ विकसित हुयी तथा महिलाओं द्वारा अपने–अपने अनुभवों व परियोजना को सफल बनाने हेतु स्वयं के साथ–साथ सम्पूर्ण ग्राम के सहयोग की बात रखी.

परियोजना के तहत की गतिविधियां

'मित्र' संस्था द्वारा प्रस्तावित गतिविधियां एवं उनके प्रभाव

क.सं.	गतिविधियां	अपेक्षित प्रभाव
1	ग्राम स्तरीय जागरुकता मिटिंग	लोगों में संगठित करना व विभिन्न पर्यावरणीय, सामाजिक इत्यादि बिन्दुओं पर जागरुक करना
2	जागरुकता सांस्कृतिक कार्यक्रम	महिलाओं को इस विधा द्वारा विभिन्न सामाजिक कुरितियां तथा उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करना.
3	एन.जी.ओ. कार्यकत्ताओं हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण	परियोजना के बारे में विस्तृत रुप से जानकारी उपलब्ध हो पायेगी
4	स्वयं सहायता समूहों हेतु दो दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यशाला	स्वयं सहायता समूहों के सदस्य समूह के बारे में विस्तृत रुप से जान पायेंगे जैसे समूह उद्देश्य, बचत, इन्टरलोनिंग इत्यादि
5	एन.जी.ओ., एस.एच.जी. व बैंकर्स ओरियेन्टेशन	समूह, एन.जी.ओ. बैकर्स में समझदारी का विकास तथा समूह को बैंक जुड़ाव में सुगमता होगी
6	मोमबत्ती निर्माण प्रशिक्षण	प्रशिक्षण से स्वयं सहायता समूह में आत्म निर्भरता व कार्य करने की क्षमता का विकास होगा
7	सिलाई व साफ्ट टाईज प्रशिक्षण	प्रशिक्षणों के माध्यम से सभी स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की आय में वृद्धि होगी, खाली समय का सदपयोग होगा
8	जैविक खाद प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन व क्षेत्र भ्रमण	प्रशिक्षणों से सदस्यों में कार्य करने की क्षमता का विकास होगा तथा आय में वृद्धि होगी
9	पालीहाउस व बेमौसमी सब्जी उत्पादन तथा जल प्रबन्धन हेतु प्रशिक्षण व क्षेत्र भ्रमण	इस प्रकार के प्रशिक्षणों से समूह के सदस्यों के काम करने की लगन व खाली समय का सदुपयोग होगा व आसानी से सामग्री मिल जाती है जिससे उनकी आय में वढोत्तरी होगी
10	मशरुम उत्पादन प्रशिक्षण व क्षेत्र भ्रमण	प्रशिक्षणों के माध्यम से सभी में कार्य करने की लगन पैदा होगी, इस प्रकार के प्रशिक्षणों के माध्यम से सभी समूह सदस्यों में आत्म निर्भरता की भावना उजागर होगी तथा उनके आय में वृद्धि होगी
11	फूलों की खेती हेतु प्रशिक्षण व क्षेत्र भ्रमण	समूह सदस्यों के इस प्रकार के प्रशिक्षणों से आय में बढ़ोत्तरी करना

परियोजना की निरन्तरता हेतु अन्य विभागों से समन्वयन

1. निरन्तरता हेतु अन्य योजनाओं से जुड़ाव, जैसे स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, आजीविका परियोजना, महिला कार्यबोझ मुक्ति इत्यादि.
2. महिलाओं का कार्यबोझ कम करने हेतु उन्नत कृषि यन्त्र, जैसे ओसाई पंखा, मडुवा थ्रेसर, पैडी थ्रैसर, दराती, कुदाल इत्यादि.
3. जैविक उपयोगिता हेतु महिलाओं को अन्य योजनाओं से भी कम्पोस्ट पिटों का निर्माण.
4. उद्यान विभाग की टैक्नोलाजी मिशन योजनाओं के तहत फलदान पौध, पालीहाउस इत्यादि वितरण.
5. भविष्य में समूहों को महासंध के रुप में जोड़ने की सोच.
6. विपणन व्यवस्था हेतु नाबार्ड से सम्पर्क.
7. बैंक से समूहों को लोन इत्यादि के प्राविधान हेतु बैंक से सम्पर्क.

केस स्टडीज

आशा की किरण......

हमारे देश में प्राचीन काल से ही महिलाओं की भिन्न–2 स्थितियां दृष्टिगोचर हुई हैं. किसी काल में निरीह मजदूर तो किसी काल मे बीरांगना के रूप में सामने आई है. परन्तु वर्तमान समय को महिलाओं का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है. महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न विभागों व संस्थाओं द्वारा कई योजनाएं संचालित की जा रही है. ऐसा ही लक्ष्य है **मित्र** संस्था का है जो विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति सुधारने में प्रयासरत है. इसी क्रम में इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के अन्तर्गत ऐपण प्रशिक्षण का कार्य संस्था के माध्यम से सम्पन्न किया गया. परियोजना हेतु अधिग्रहित स्वयं सहायता समूह में से एक समूह ग्राम तोली का प्रेरणा समूह भी है. परियोजना शुरूआत में महिलाओं की ऐंपण विषय को व्यवसाय की दिशा के बारे में जानकारी न होने के कारण विशेष रुचि उजागर नहीं होने के कारण संस्था को कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ा. परन्तु संस्था द्वारा महिलाओ को विभिन्न विधाओं के माध्यम से ऐंपण के बारे में जानकारी दी गयी तथा उन्हें बताया गया कि हमारे समाज में शादी विवाह, तीज त्योहारों, शुभ अवसरों आदि में भी ऐपण का विशेष महत्व होता है तथा ऐपण के द्वारा कम खर्चे में भी आप अपने घर, पूजा अर्चना के स्थान को सुन्दर एवं आकर्षक बना सकते है तथा इससे कुछ धन भी अर्जित कर सकते हैं.

इसी क्रम में 'मित्र' संस्था द्वारा विकास खण्ड लमगड़ा में इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत 10 दिवसीय ऐपण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. प्रशिक्षण में 05 गांवों की 20 महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया. जिसमें तोली गांव के सरस्वती व प्रेरणा स्वयं सहायता समूहों की 05 महिलाऐं प्रशिक्षण हेतु शामिल हुई. श्रीमती पार्वती देवी जो कि प्रेरणा स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष भी है, ने भी प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया. जो प्रशिक्षण उपरान्त आज इस विधा को आयसर्जन के रुप मे भी अपना रही है. इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं का कार्यबोझ कम कर उन्हें आयसृजक गतिविधियों से जोड़ना है. इसी क्रम में श्रीमती पार्वती देवी का कहना है कि आज उन्हें जब भी समय मिलता है तो वह इस समय में ऐपड़ बनाने का कार्य करती है. उनके द्वारा बनाई गयी ऐपण कृतियों को विकास खण्ड लमगड़ा द्वारा देहरादून में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत आयोजित प्रदर्शनी में भी शामिल किया गया, लोगों द्वारा इसे काफी सराहा गया. इन प्रदर्शनी में उनके द्वारा निर्मित 10 ऐपण में से 07 ऐपण बिकी जिनका उन्हें रु. 1050.00 मिला. इसके साथ ही संस्था भी उनके इस उत्साह को बरकरार रखने हेतु उनके द्वारा निर्मित ऐपण की बेहतर मार्केट हेतु विभिन्न प्रदर्शनियों में शामिल करवाने का प्रयास करती रहती है. वर्तमान समय तक उनके कथनानुसार उनके द्वारा रु. 3000.00 की ऐपण बेची जा चुकी है, जिसमें मात्र रु. 500.00 की लगत लगी. वह अब इस ऐपण में और अधिक गुणवत्ता लाने की कोशिश कर रही है. जैसा कि पर्वतीय क्षेत्र की मुख्य आजिवीका कृषि व पशुपालन पर निर्भर है व सभी महिलायें वर्षभर इसी कार्यबोझ से दबी रहती हैं तथा उनका कहना है कि यह व्यर्थ समय में कुछ धन अर्जित करने का एक अच्छा साधन है तथा इसके माध्यम से हम अपनी विलुप्ल हो रही संस्कृति को भी संजोकर रख सकते हैं. आज उनके उत्साह व आय को देखकर कुछ अन्य महिलाओ का रुझान भी इस दिशा में बढ़ रहा है.

चलते जाना है..........................

हमारे पहाड़ की महिलाओं का जीवन कदम–कदम पर जटिलताओं से परिपूर्ण है. उनका दिन घर–खलिहान से प्रारम्भ होता है और वही पर खत्म हो जाता है. उनके घर और गांव से बाहर क्या हो रहा है इसका ना तो उन्हें ज्ञान है न ही जानने की कोशिश करती है, जैसे कि उनकी दुनिया गांव तक ही सीमित है. ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को ना तो अपने अधिकार का पता है और ना ही इस बारे में वह कभी सोचती है. इस कशमकश में वह न ही अपनी अर्थिक स्थिति सुधार पाती है न सामाजिक.

'मित्र' संस्था द्वारा इन ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक व विकास कार्यो में भागीदारी बढ़ाने की पहल 2002 से लमगड़ा क्षेत्र में की गयी. जिसके तहत महिलाओं को संगठित कर सशक्त बनाने की कोशिश कर रही है. भले ही इसके माध्यम अलग–अलग परियोजनाऐं रही हो, परन्तु लक्ष्य एक है. ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की विकास में भागीदारी सुनिश्चित करना एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ना. इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए मित्र संस्था द्वारा इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत विकास खण्ड लमगड़ा में 23 गांवों की लगभग 370 महिलाओं को विभिन्न सामाजिक, पर्यावरणीय, समूह, उनके अधिकारों सम्बन्धी विभिन्न प्रशिक्षण को साथ–साथ आयसृजक प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं. इसी क्रम में संस्था द्वारा परियोजना के तहत 05 गांवों की 20 महिलाओं को मोमबत्ती निर्माण प्रशिक्षण दिया गया. जिसमें कनरा गांव के पार्वती, रूकमणी समूह के सदस्य व ध्यूलीधौनी के दुर्गा समूह के सदस्यों द्वारा प्रतिभाग किया गया. यह प्रशिक्षण ग्रामीण महिलाओं के लिए एक नई चीज थी. अधिकतर महिलाऐं घर के काम–काज में ही व्यस्त रहती है और वह महिलाएं कहती थी कि हमें अपने कार्यो से बिल्कुल भी समय नही मिल पाता है व प्रशिक्षण लेकर क्या करेंगे.

मित्र संस्था द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में लाभार्थियों को मोमबत्ती के लाभ से अवगत कराया गया. जिसके तहत उन्हें अनेक प्रकार के सजावटी मोमबत्ती, दीये, जैल मोमबत्ती इत्यादि बनाने की विधियां बताई गयी. उन्हें मोम की गुणवत्ता, उपलब्धता, सांचे इत्यादि के बारे में भी बताया गया. जिसमें प्रतिभागी महिलाओं द्वारा विशेष रूचि दिखाई गयी व बढ़चढ़ कर प्रतिभाग किया गया.

प्रशिक्षण फलस्वरूप वर्तमान समय में कनरा व ध्यूली रौतेला गांव की महिलाएं मोमबत्ती बनाना भली–भांती सीख चुकी है. उनका कहना है इससे पूर्व उन्हें खेती एवं घरेलू कार्यो के अतिरिक्त किसी और आयसृजक गतिविधि की खास जानकारी नही थी. परन्तु मित्र संस्था के प्रयास से हमें कुछ और विषय पर भी जानकारी प्राप्त हुई है. इस वजह से भी वह अब घरेलू कार्यो को शीघ्र निपटाकर प्रशिक्षण व मिटिंग में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करती हैं. साथ ही उनका कहना है कि मोमबत्ती निर्माण प्रशिक्षण काफी मनोरंजक लगा व भविष्य में इसे आय सृजक गतिविधि के रुप में अपनाने का भी निर्णय लिया गया है. जिसमें उनका कहना है कि वे अपने व्यक्ति इस्तेमाल के साथ–साथ गांव व विकासखण्ड स्तर भी इन्हें बेचेंगी. इसी क्रम में कनरा गांव के पार्वती व ध्यूनी धौनी के दुर्गा समूह ने स्वयं के धन से एक मोमबत्ती निर्माण हेतु सांचा क्रय करने के लिए संस्था कार्यालय में धनराशि जमा की जा चुकी है. संस्था उनकी जरुरत अनुसार शीघ्र ही सांचे क्रय कर उन्हें उपलब्ध करा देगी. समूह का कहना है कि हम आगे चलकर इस कार्य को व्यवसाय के रूप में भी अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर अपने जीवन स्तर में भी सुधार कर सकते हैं.

।ददमग 5रू स्पेज व ि्भ्ळे `नचचवतजमक इल छळव् चंतजदमत ूपजी प्ैटल थ्नदके
;` व ि्द्व

छंउम व ि्च्तवरमबज क्पेजतपबज ;पदकपबंजम दंउम द्धरू

छंउम व ि्चतवरमबज ठसवबा ; पदकपबंजम दंउम द्ध रू

टपससंहमध्ज्वा दंउम	ेभ्ळ छंदम	क।ज्म व ि थ्वतउंजपवद	ज्वजंस डमउइमते;दवे द्ध		डवदजीसल ेंअपदह चमत उमउइमत ;त्ेद्ध		ज्वजंस ेंअपदहे ;त्े द्ध	प्दजमत सवंदहपदह ;ंउवनदज;त्ेद्ध
			।ज ेजंतज	च्तमेमदज	।ज ेजंतज	च्तमेमदज		
आनुली	वन्दना	15ध07ध05	5	5	25	25	2753ण28	1225ण00
तोली	जय संतोषी मॉ	10ध02ध02	9	9	25	25	17854ण45	18000ण00
तोली	प्रेरणा	25ध07ध01	14	14	30	30	15273ण00	20000ण00
तोली	सरस्वती	06ध08ध04	7	7	20	20	5101ण76	17000ण00
सत्यों	मिलन	17ध03ध04	8	8	20	20		15000ण00
सत्यों	गंगा	17ध03ध04	6	6	20	20	6600ण00	10000ण0
सत्यों	दुर्गा	01ध01ध02	5	5	20	20	5420ण00	20000ण00
सत्यों	वृंदा	13ध01ध02	6	6	20	20	5330ण00	10000ण00
सत्यों	प्रकाश	01ध01ध02	5	5	20	20	8980ण00	18000ण00
रालाकोट	जय सैम देवता	06ध05ध05	9	9	20	20	3854ण00	1000ण00
ढैली	जय नन्दा	06ध10ध05	7	7	50	50	17533ण78	15000ण00
बलिया	लक्ष्मी	13ध08ध05	5	9	25	25	4201ण98	1500ण00
खरसोड़ा	सिद्व जी	19ध12ध05	7	7	25	30	4190ण00	7000ण00
बरगला	जय सैम	15ध01ध07	12	12	20	25	3188ण11	1500ण00
कनरा	शान्ति	08ध09ध05	8	8	20	20	4484ण93	8000ण00
कनरा	पार्वती	18ध11ध01	9	9	30	30	15367ण57	35000ण00
कनरा	रूकमणी	29ध09ध02	8	8	20	20	12860ण00	25000ण00
कनरा	यमुना	17ध01ध04	11	11	30	30	9782ण56	15000ण00
ध्यूली धोनी	हर ज्यू	23ध06ध04	9	9	25	25	8476ण70	4000ण00
ध्यूली रोतेला	प्रगति	14ध05ध04	6	6	25	25	4050ण85	500ण00
ध्यूली रोतेला	दुर्गा	07ध08ध04	12	12	30	30	4251ण20	500ण00
बरम	महिला संकल्प	14ध09ध04	6	6	25	25	2796ण00	2000ण00
बरम	महिला विकास	11ध03ध05	7	7	140	140	1495ण49	1500ण00
बरम	ग्रामीण महिला संगठन	12ध02ध07	7	7	20	20	3367ण00	1000ण00
बरम	महिला उत्थान	09ध05ध06	6	6	20	20	1135ण67	1500ण00
बरम	महिला विचार मंच	09ध05ध06	11	11	20	20	1457ण00	2500ण00
उडियारी	बाराही	28ध07ध04	5	5	25	25	3356ण00	12000ण00
झाल डूॅगरा	भगवती	08ध07ध04	9	9	25	25	3856ण00	8000ण00
तल्ला लमकोट	एकता	02ध01ध07	11	11	20	20	19204ण00	40000ण00
तल्ला	रूपा	02ध01ध07	7	7	30	30	10698ण00	30000ण00

लमकोट								
चायखान	प्रिति	06ध01ध06	10	10	20	20	3400ण00	8000ण00
चायखान	रोशनी	06ध01ध06	5	5	20	20	3837ण00	6000ण00
घूरा संगरौली	विकास	05ध01ध06	11	11	20	20	16440ण00	30000ण00
काण्डे	सद– भावना	14ध02ध04	8	8	20	20	5330ण00	10000ण00
काण्डे	धाम देवता	12ध05ध04	6	6	20	20	9724ण50	15000ण00
काण्डे	प्रिया	10ध05ध04	11	11	20	20	12826ण00	18500ण00
जैती	मीराबाई	01ध08ध04	9	9	20	20	6376ण46	36500ण00
सुनाड़ी	महिला मित्र	02ध10ध04	8	8	20	20	2682ण00	15200ण00
लोहना	प्रेरणा	08ध12ध04	9	9	20	20	14912ण00	20400ण00
लोहना	गायत्री	28ध10ध04	6	6	20	20	3920ण00	3000ण00

ंददमग 7रू स्पेज वि ोमजे बतमंजमक ूपजी ैभ्ळ ध् प्दकपअपकनंस

छंउम वि च्वितरमबज क्पेजतपबज ;प्दकपबंजम दंउम द्ध रू

छंउम वि च्तिवरमबज ठसवबा ;पदकपबंजम दंउमद्ध रू

टपससंहमध्ज्वा दंउम	ैभ्ळ छंउम	ब्ंजमहवतल'	छंउम वि ोमजे	छनउइमते वि ोमज	टंसनम वि ोमज ;ते द्ध	ठमदमणि;छवद्ध ''	न्ेंहम वि ोमज पद ठतपमि
ध्यूली रौतेला	दुर्गा	प्छक	स्ण्क्ण्च्ण् जंदा	1	6000ण्00	1	
ध्यूली धौनी	हरज्यू	प्छक	च्वसल ीवनेम	1	7000ण्00	1	
बरम		प्छक	टमतउप	1	1500ण्00	1	
बरम		प्छक	ब्ण्च्ण्च	1	750ण्00	1	
बरम		प्छक	ठण्क्ण् भ्ममच	1	500ण्00	1	
बरम		प्छक	छंकममच	1	5000ण्00	1	
बैगनियॉ	देवी मॉ	प्छक	च्वसल ीवनेम	1	7000ण्00	1	

नोट :– अन्य ऐसेटस निर्माणाधीन है ।

।ददमग 8 रू ब्वंबपजल ठनसपकपदह वि ैभ्ळ उमउइमते

छंउम वि जतंपदपदह	क्ंजम वि जतंपदपदह	ैभ्ळ छंउम	छनउइमते उमउइमते जतंपदमक	क्ंले वि जतंपदपदह	ज्वजंस बवेज वि जतंपदपदह ;त्े़द्ध	न्ेंहम वि िमज पद ठतपमि
अभिमुखिकरण कार्यशाला	3.4ध्04ध्06	मिलन	6	2	6000ण्00	
		गंगा	1			
		दुर्गा	1			
		प्रकाश	2			
		अन्य	18			
पपेठ शो	5ध्04ध्06	प्रगति	10	1	1000ण्00	
		दुर्गा	5			
		अन्य	25			
पपेट शो	6ध्04ध्06	भगवती	9	1	1000ण्00	
		भुमियॉ	8			
		अन्य	19			
पपेट शो	7ध्04ध्06	जै सैम	19	1	1000ण्00	
		अन्य	19			
बैंकर्स ओरियंटेशन	9.10ध्04ध्06	जै संतोषी मॉ	2	2	20000ण्00	
		प्रेरणा	4			
		वृंदा	3			
		सरस्वती	3			
		हरज्यू	1			
		आरती	1			
		रूकमणी	2			
		चमेली	1			
		पार्वती	3			
		मिलन	2			
		गंगा	2			
		प्रकाश	1			
		दुर्गा	2			
एस0 एच0 जी0 ओरियंटेशन	13.14ध्04ध्06	दुर्गा	1	2	6000ण्00	
		प्रगति	1			
		गंगा	1			
		मिलन	3			
		लक्ष्मी	6			
		वन्दना	2			
		दुर्गा	1			
		सिद्व जी	2			
पपेट शो	18ध्04ध्06	लक्ष्मी	4	1	1000ण्00	
		अन्य	17			
पपेट शो	19ध्04ध्06	सि़द्व जी	5	1	1000ण्00	
		वन्दना	2			
		अन्य	23			
पपेट शो	20ध्04ध्06	महिला संकल्प	5	1	1000ण्00	
		स्वर्ण जयन्ती	2			
		शहीद नर सिंह टीका सिंह	1			
		सदभावना	2			

		ग्रा0म0विकास	5			
		ग्रा0म0संगठन	5			
एस0 एच0 जी0 ओरियंटेशन	27.28ध04ध06	रूकमणी	3	2	6000ण00	
		हरज्यू	3			
		पार्वती	5			
		मिलन	3			
		प्रगति	7			
पपेट शो	5ध05ध06	सरस्वती	5	1	1000ण00	
		प्रेरणा	8			
		जै संतोषी मॉ	7			
		अन्य	10			
एस0 एच0 जी0 ओरियंटेशन	19.20ध05ध06	वृंदा	3	2	6000ण00	
		सरस्वती	2			
		हरज्यू	1			
		आरती	2			
		प्रगति	1			
		सिद्व जी	2			
		लक्ष्मी	2			
		वन्दना	3			
		जय नन्दा	2			
		प्रेरणा	4			
		दुर्गा	1			
		जै संतोषी मॉ	1			
एस0 एच0 जी0 ओरियंटेशन	20.21ध05ध06	वन्दना	5	2	6000ण00	
		सिद्व जी	7			
		अन्य	5			
एस0 एच0 जी0 ओरियंटेशन	18.19ध05ध06	जय नन्दा	8	2	6000ण00	
		आरती	1			
		ग्रा0म0संगठन	5			
		प्रगति	6			
ऐपण	21.30ध05ध06	प्रेरणा	2	10	41000ण00	
		मिलन	3			
		गंगा	2			
		सरस्वती	4			
		दुर्गा	1			
		जय नन्दा	5			
सिलाई	27ध05ध06. 02ध06ध06	प्रगति	5	6	33750ण00	
		दुर्गा	1			
		सिद्व जी	6			
		वन्दना	4			
		पार्वती	3			
		रूकमणी	3			
		लक्ष्मी	1			
अभिमुखिकरण	02.03ध06ध06	सरस्वती	5	2	6000ण00	
		जय नन्दा	1			
		आरती	2			
		लक्ष्मी	1			
		प्रेरणा	2			
		दुर्गा	1			
		वन्दना	1			
		वृन्दा	4			
		जै संतोषी मॉ	2			
		रूकमणी	2			
मोमबत्ती	05.10.06ध06	पार्वती	9	6	37400ण00	
		रूकमणी	4			
		प्रगति	2			

		जय नन्दा	1			
		दुर्गा	3			
		प्रेरणा	1			
अभिमुखिकरण	12.13ध06ध06	सिद्व जी	3	2	6000ण00	
		वन्दना	2			
		सरस्वती	2			
		जै संतोषी मॉ	1			
		प्रेरणा	1			
		आरती	1			
		लक्ष्मी	2			
		गंगा	2			
		मिलन	2			
		प्रकाश	1			
		वृंदा	1			
पपेट शो	15ध06ध06	लक्ष्मी	6	1	1000ण00	
		अन्य	31			
जैविक खाद निर्माण	10.12ध10ध06	महिला विकास	7	3	31450ण00	
		महिला विचार मंच	6			
		महिला संकल्प	6			
		महिला संगठन	7			
		महिला उत्थान	12			
		अन्य	16			
प्रोटेक्टेड कल्टीवेशन एवं जल संग्रहण	01.03ध11ध06	एकता	3	3	36700ण00	
		सरस्वती	2			
		विकास	1			
		सिद्व जी	6			
		प्रीति	2			
		लक्ष्मी	1			
		सहेली	6			
		देवी मॉ	1			
		प्रगति	5			
		दुर्गा	2			
		अन्य	5			
अभिमुखिकरण	10.11ध12ध06	जै संताषी मॉ	6	2	6000ण00	
		सरस्वती	6			
		प्रेरणा	9			
		जय नन्दा	3			
		अन्य	5			
अभिमुखिकरण कार्यशाला	11ध05ध07	प्रिया	12	2	6000ण00	
		सदभावना	7			
		महिला मित्र	5			
		मीराबाई	4			
		धाम देवता	8			
		अन्य	3			

						0000
	00						
						श्रश्रश्र